ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' १७६ म अंक १५ अप्रैल २०१५ (वर्ष ८ मास ८८ अंक १७६)

ऐ अंकमे अछि:-

ललन कुमार कामत विशेषांक

ललन कुमार कामत

भगवाने भरोसे

कोसीक कछेरमे एकटा छोट-छीन गाम- छोटपुर अछि। छोटपुरमे अटकुदास नामक एगो मध्यमवर्गीय किसान छथि। कोसीक बिकराल रूपसँ ग्रामीण लोकनि रेहल-खेहल छथिये। सभ साल कोसीकेँ झेलैत आएल छथि। अटकुदास धार्मिक प्रवृतिक लोक छथि। प्रकृतिक विपतिकेँ झेलैतो भगवानपर हिनका अनन्त आस्था छन्हि।

अखार मास आएल। कोसीक मिजाज बिकराल हुअ लगल। लोकसभ आन साल जहाँति तैयारीमे रहथि। मुदा ऐबेर कोसी अपन बाढ़िक अनहोनीघण्टी शुरूहेसँ बजबऽ लगल।

लोक सभकेँ भनक लागल जे कुसहाबान्ह टुटि गेल! सौंसे दिगारिमे आतंक जकाँ मचि गेल! गाम-घरमे बाढ़िक पानि पसरए लगल। सभठाम हाहाकारमिच गेल! सभ कियो अपन-अपन जानमाल लेने ऊँचका स्थान दिस भागऽ लगल। जगह-जगहपर फँसल लोककेँ बँचबैखातिर नाह चलए लागल। सभ कियो घर-बार छोड़ि देलक मुदा अटकुदास अपन घरक छतपर चढ़ि कऽ भगवान-भगवान करए लगला।

भीषण बाढ़िक चपेटमे आबिसौंसे गामक घर-मकान डुमऽ लगल। जइ घरक छतपर अटकुदास ठाढ़ छला सेहो नकसकाइत-नकसकाइतडुमि गेल। मुदा अटकुदासकेँ अखनो अपन मलिकपर अटुट भरोष छनिहें ओ अपन घर नै छोड़लनि।

गामक एकगोटे भसाठीबला लकड़ीकेँ जोड़िडोंगा-नाव बना अटकुदासकेँ बँचबैले आएल। घर लग आबि सोर पाड़ैत कहलखिन-

"भागऽ हौ अटकुदास! तूँ किए एतए अँटकल छहक? भागऽ नै तँ जान नै बँचतऽ।"

अटकुदास घरेपर सँ बजला-

"तूँ सभ भागिजा, हमरा किछु नै भऽ सकत। हमरा भगवानपर भरोस अछि। वएह हमरा बँचेथिन।"

नाहबला अपन जान बँचबैत आगू बढ़िगेल। बाढ़िक स्तरमे आरो वृद्धि होएत गेल। अटकुदासक घरक छतपरसँ आब पानि बहए लगल।

एकटा सरकारी आदमी मोटर नाव नेनेफँसल लोक सभकेँ ताकि रहल छल। अकटुदासकेँ अझप्पे देखि चकरि कऽ सोर केलक-

"के छहक! आबऽ हमरा नावपर बैठ जा, भीषन बाढ़ि आबिरहल छै, जान बँचाब।"

अटकुदास हिनको वएह उतर देलखिन-

"तूँ सभ भागि जा, हमरा किछु नै भऽ सकत। हमरा भगवानेपर भरोस अछि वएह हमरा बँचेथिन।"

नावपर आरो किछु लोकसभ बैसल छल, नावबला आगू बढ़ि गेल। बाढ़िक पानि आरो बढ़ैत गेल। कनीकालक पछाति फेर, एक्टा हेलीकेप्टरबला आएल। हिनका देखिते ऊपरसँ रस्सा खसबैत चिकरि कऽ अबाज देलकनि-

"आब! रस्सी जोरसँ पकड़! हम खींचै छियौ। हम तोरा सुरक्षित जगहपर पहुँचेबौ।"

अटकुदास हिनको नकारि देलखिन-

"तूँ सभ भागि जा, हमरा किछु नै भऽ सकत। हमरा भगवानेपर भरोस अछि, उवेह हमरा बँचेथिन।"

हेलीओकेप्टरबालकेँ हारि कऽ जाए पड़ल। अन्तमे अटकुदासकेँ स्वर्गक रस्ता देखए पड़ल।

जब भगवानक दरबारमे हाजरीक समए आएल। अटकुदासक मनमे भगवानसँ जे रूहन-उपराग रहनि से कहऽ लगलनि-

"हे नाथ! हमरा अहाँक प्रति अटुट बिसवास छल, अटुट भरोष छल जे अहाँ हमरा बँचबै खातिर निश्तुकी आएब। मुदा एना केना भऽ गेल, अपने हमरा किए नै बँचेलौं?"

भगवान जबाव देलखिन-

"तोरा आब केते मदति हमरासँ चाही? दूटा नावबलाकेँ हमहीं भेजलौं तूँ नै एलँ, एकटा हेलीकेप्टर बलाकेँ सेहो भेजलौं, तूँ नै एलँ। बाजऽ, आब आरो केते तोहर सहायता हम करब।"

-ललन कुमार कामत
सम्पर्क-
ललमनियाँ, मरौना, सुपौल।
गोल इंग्लिश गार्डेन निर्मली।

दहेजक मारि

एकटा समए छल जब शिवचरणकेँ चारि बिगहा खेत, जोड़ भरि बरद, कटही गाड़ी आ माल-भैंस सँ दुआरि भरल-पूरल रहै छल। हिनकर जिनगीओ खेतिएमे, खेती करैत बीतल अछि। खेतक उपयोगी सभ समान, जेना हर, पालो, चौकी, कोदारि, खुरपी, हँसुआ, इत्यादि, एखैनो दुआरिपर पसरल अछि, मुदा शिवचरणकेँ आब खेत नै बँचल। खेतक बिनु सभ ओजार झाम बुरैए आ बीज खेने जाइए। एगो बुड़बा नेङरा बरद टुटलाहा नादिपर टकटकी लगौने ताकैत रहैए। कटही गाड़ीक तम्था सरैककेँ खसिस्सल जाईए। एकटा चक्का माटिमे धसल आ दोसरक डेना सभ छुटि-झरिकेँ बिखरल जाइत अछि।

शिवचरणकेँ तीनटा बेटी रामेशरी, कालो, पारो आ तैपरसँ बिरजू पनरह सालक सभसँ छोट बेटा अछि। शिवचरण आए बिना जथा-पथाक लोकमे गिनल जाइत अछि। एकर कारण अछि तीनटा बेटीक बिआह। सभटा बेटीयो तरे-उपरे छेलनि तँए बिआहो आ दहेजो तिलकक बोझतर दबाएकेँ लकिर सँ फकीर बनि गेल अछि।

ISSN 2229-547X VIDEHA

दहेज! ई केहन प्रतिरोधी प्रथा छी जेकर शिकार शिवचरणेटा नहि कतेक आरो लोक भेल अछि। मोल-भाव तँ माल-जाल आकि चीज-बीतक काएल जाइये। आऽ जाहि बस्तुक दाम प्राप्त होइत अछि, ऊ चीज कीननिहारकेँ सौंप देल जाइत अछि। मुदा ई केहन प्रथा छी, जेकर मोल-भाव केलहा रकमो,आ कन्या रूपी बस्तुओ, एके आदमी नेने जाइए? परिवारमे एकटा आबिनहरि बहूक माने होइत अछि, काम-काजमे आ परिबारीक उपार्जनक बास्ते एकटा अतिरिक्त श्रमिक। दोसर दिश, कनियाँक पिताक परिबारमे एकटा कमाऊ सदस्यक खगता भऽ जाइत अछि। छति तँ कनियाँक पिताकेँ होइत अछि, मुदा छतिपूर्ति बड़क बाप आकि बड़केँ प्राप्त होइत अछि। दहेज! कोनो सहेजकेँ राखैक प्रथा छी?

शिवचरण पचपन बरिखक आ हिनक पत्नि पार्वती पचासक अबस्थामे छथि। हिनका एके बिगहा जमीन बचल अछि। पनरह बरिखक एकलोता बेटा बिरजू बूढ़ माए बापक बूढ़ा-वस्थाक पहिया खीचैले पनपिते रहिन की असहनीय कर्जाक बोझ तरमे तेहेनकेँ दबाए गेल, जेना उनार भेल कटही गाड़ीक पाछाँ असगर बहलवान दबिकेँ फर-फराए उठैए। तीन महिना पहिले छोटकी बेटी पारोकेँ बिआह सम्पन्न केलखिन, जैमे कर्जा-बर्जा भऽ गेल रहिन। तैपरसँ, एबेरूक गहुँमक खेती तेहेनकेँ धोखा देने छल जे गफाे भरि फसल घर नै आएल छलनि। माध फागुनमे, जब फसल नीककेँ पकल जाइत छल, पछुआ झँाटि,बिहारि आ पत्थरक बज्रपात तेहेनकेँ भेल छल, जे सभ किसानक फसल माटिया माटि भऽ गेल रहिन आ काइल-धाइल खेती नोकसान भऽ गेल छल।

ओहुना शिवचरणक घरमे अन्न पानिक दिक्कत चलिते रहैत छल। मुदा एहि साल सनक दिक्कत, साइते कहियो भेल रह्नि। ओनातँ, बहुतो लोक गाममे ओहने गरीबीकेँ झेल रहल अछि। सभक अपन जीबैक तरीका अछि। शिवचरणक घर छ मास चाउर आ छ मास गहुमक सहारे कटैए। कहलो जाइए, गरीब लोक भगवाने भरोसे जीबैए। मुदा भगवानक आँखि कखनैन केकरा पर टेंड़ भऽ जाइत अछि, ई कोइ बुझि सकैए। ऐ बेरि धान महराज तँ अप्पन पारि पुरेलखिन, मुदा गहुम महराज खिसिया गेलखिन। जन मजदूर सभ परदेश आकि शहर खटैले चलिगेल। मुदा शिवचरण ऐ बुड़हारीमे कते जाएत आ की करत? सोचएपर मजबूर अछि।

बिकना, नन्हीया आ चौठिया ढेरबे सँ पंजाब खटैत अछि। तीनुटा गामक सभसँ गरीब घरक रहिन मुदा जहियासँ परदेश खटै लागल, गरीबी हिनका सभक घरसँ भागि गेल। हिनका सभक जथा, पुजी आ नीक लता-कपराकेँ देखि कते लोकनिक मुँह ललिया जाईए।

बिकना आइये काल्हमे पंजाबसँ एल अछि, जे बेदरामे शिवचरणकेँ चरवाही कैरकेँ आ अन्न-पानि खाएकेँ पोसल-पालल गेल रह्नि। मांगि-चांगि कँ आकि केकरो देलहा,अंगा पेन्ट पहिरैत छेलिन। कतेक-कतेक दिन तकि, फाटल-चिटल अंगा, पेन्टक बिचला सिलाई टूटि जाइत रह्नि आ भालरि सन डाँरमे फर-फर करैत रहिन। ततबे नै, डाँरसँ मटिया-माटि भेलहा कच्छा, बिस्टी जँका झूलैत रहै छल। मुदा पहिनुक बिकना, आ आजुकमे अन्तर भऽ गेल अछि। हिनकर रोनक आ चालि-चलन देखिते बनैए। जब गाम आबैए तँ लक्स सुजुकिकेँ लबका जँघिया, लबका गंजी आ लबे लुँगी पहिरकेँ, कांखमे तीन बैण्डक फिलिप्स रेडियो लऽकेँ फुल भाइसमे, दहिना हाथे लुंगी उठाएकेँ तेना पकरैए,जेनाकी तरका सुजूकिक जँघिया ओहिना देखाइत रहैए। इ पहिराबा देखिकेँ कतेकोक आँखि पथराइत रहैत अछि।

जब जब बिकना गाम आबैए, शिवचरण-पार्वती दुनु बेक्तिक भेंट जरूर करैए। एहि बेरूक शिवचरणक लचारी के नै जानैत अछि? बिकना अपन सलाह आ सहानुभूतिकेँप्रकट करैले आएल आ कहै छैन्हि-

“ददागौ, बिरजू कक्काकेँ ऐबेर हमरा संगे पंजाब कमाईले जाए दहक।”

पार्वतीकेँ ई बात पसिन नै परलनि। ओ बजली-

“एखैन! ऐ अजोह बेदराकेँ? नै रौ बौआ,जो तुँहें कमैहँ गामे मऽ छै तँ कनु बैठल रहै छै? खेती-बाड़ी, हर-फार तँ कैरते छै। असगर तँ बड़हसपतियो झूठे होयत छै। एकरा बाबू जीसँ आब नै स्हरै छै।”

मुदा शिवचरणक बिचार अलग रह्नि। ओ अपन लचारीक जानैत रहथि जँ दु पाएक आमदनीक जोगार नै हेत तऽ आब इज्जत नै बचत। बजलखिन-

ISSN 2229-547X VIDEHA

"कमौत नै तऽ ऐ खेतके ओगरनेसँ किछु नै हाएत। उबजाबारि साड़हे बाइस अछि। एकर भरोसे काज नै चलबला अछि।"

हँमे हँ भरैत फेरि शिवचरण बाजे छथि-

"हँ रो बिकना हमर मन छौ नने जाहि तू अपने संगे। नीक काम धराए दियहनि"

टालमटोल हैत बिरजूके ँ पंजाब जाइले सहमति बैनिए गेल। पार्वतीके ँ बेटा मोह मे मन घबराइत रहेन मुदा मानए परल। भड़ा खर्चाबिकने गछलक। जाएक दिन एल। पार्वती दू किलो खेड़हि बेचके ँ बिरजू बास्ते बटखरचा बनेलखिन। दरभंगा सँ अमृतसर के तीन बजे दुपहर मे ट्रेन अछि। निर्मली सँ छ बजिया भोरका गाड़ी पकरैले पाचे बजे सभगोटे बिदाह भेलनि। बिरजूके ँस्टेश्ट्रन छोरैले पार्वती माथ पर बेग आ हाथमे बटखरचाके ँ पन्नी नेने बिदाह भेली। बिरजूओ गोंसाइके ँ गोर लागि मोहल्लाके ँ बूढ पूरनकँ पाएर छुबैत आगा बढल।शिवचरणो संग लागल बिदाह भेलनि। बाट भरि बिरजूके ँ समझाबैत बुझाबैत,

"असगर कतौ नै निकलिहन। मन लगाएके ँ काम करिहेन। केकरोसँ झगड़ा झटि नै करिहेन। टेलिफोन करैत रहिन।"

इत्यादि तरहसँ सिखाबैत स्टेशन पर पहुँचल। ओमहर पार्वतीके ँ मन बेथित छैन, आँखि डबडबाएल अछि मुदा नोर भितरे भितरे पिबैत रही। साड़ीसँ मुँहके ँ झाँपने, मनक बेदनाके ँ मनेमे दबेने, बिरजूके ँ स्नेहक दृष्टिसँ देखैत, गाड़ी खुलैके ँ इन्तजार कैर रहली हेन। कनीए कालके ँ पछाति गाड़ी स्टेशनसँ ससरे लागल, पार्वतीके ँ मन आउर बिहल होयत गेल। जेना दुधारू गायके ँ लेरू दुध पिलाके ँ पछाति नंगरी ऊठाएके ँ म्लेछा मारैत जब नजरिसँ ओझल भऽ जाइए आ ओम्हर गाए कान खड़ा कैर बोमि दिए लागै अछि। तहिना पार्वतीके ँ मन होइय कानी, मुदा सोचै छथिन्ह जे बेटाके ँ सामने कानब त बेटाके ँ मन दुखी भऽ जाएत। गाड़ी रेस पकरै लागल, एकबरि फेरि बिरजू अंतिम झलकले माए पिताके ँ तरफ ताकलक। गाड़ी आगा बढैत गेल आ पार्वतीके ँ धैरजके ँ बान्ह टुटैत गेल। अदृश्य होयत गाड़ी परसँ नजरि घुमि आएल आ पार्वती भोकारि पारि के ँ काने लागली।

जेठक महिना आएल। समएसँ बरखा हुए लागल, आ किसान सभ रोपनीमे भिर गेल। शिवचरणो एकटा बरदक भजैती हरसँ काम चलाबे लागल। एक दिन छौड़ि एक दिन हरके ँ पार होयत रहेन ओयसँ कतए सम्हरत? मुदा रहथि असगरे। अवस्थो हिनकर किनारे पकरने जाएत रहेन।चिन्ता फिकिर, तैपरसँ खान पान मे कमि, देखैमे सत्तर सालक लागैत रहेन। सरीर सुखिके जेना जिमहरके सट्टा सन भऽ गेल रहेन। एक एकटा नस देह परहसँ ऊपर अलैग गेल रहेन। पजराके ँ, पीठके ँ आ आनो हार परके ँ मांस जेना बिलाए गेल रहेन। सचमे, अन्हरिया रातिमे कोय अनचिन्हार हिनका देखता त असलि भूत समैझ बेहोश भ जेता। ई तऽ जबानीके ँ खाएल पीयल काया छैन्ह जे चिमठि आ करगर छैन।

आय पनरह दिनसँ भरि भरि दिन खेतमे काम करैत झूल झूल भऽ गेल अछि। जेना अन्न पानिसँ भेंटे नै। साँझ होयत घर आबैये आ बोखार सँहुहुवाए लागैए। गामक बैद्य सँ ईलाज करेलक मुदा कोनो फर्कनै परल। एक तऽ खेतिके ँ तरक आ दोसर हाथ मुँठी खली। नीक डाक्टरसँ ईलाज कतए सँ कराएत? अहु हालत में, जाबे धरि देहमे शक् लागल शिवचरण खेतमे खून पसीना बहाबैत रहल। जेना तेना खेति सम्पन भेल।

खेति सम्पन होयते, शिवचरण नीक जेका बीमार भऽ बिछान धरि लेलक। बिनु पायके ँ ईलाज कतए सँ हाएत? ओहुना भादो मासमे किसानके ँ घर खगले रहैए। कर्जाके ँ नाम पर लोकसभ ठाड़हो नैहुए दैए। सेठ साहुकार आ पुजी पघा बला लोक बिनु गहना जेबरके ँ बातो नै करैए। पारोके ँ दुरागमन नै भेल रहेन ताँय नैहरे मे रही। पिताके ँ हालति देखि पारोके ँ नै रहल गेली, ओ अपन बुट्ट आ हँसुली निकाएलके ँ माए पार्वतीके ँ दैत कहली

"माए! इ ले, एकरा बन्हकी लगाके ँ बाबू जीके ँ ईलाज कर।"

पार्वतीक मन एकर स्वीकृति नै दैत रहेन मुदा पतीके ँ जर्जर अवस्थाक देखि बेझक स्वीकार कऽ सेठ लूचाय ठाकुर लग रखि पनरह सए टका उठाए शिवचरणके ँ तमुरियाक डा. डी. एस. प्रसाद सँ देखाए दबाई

ISSN 2229-547X VIDEHA

चलाबे लगली। भोर साँझ आ दुपहर पनरह दिनक दबाई केँ डोज रहेन। दस दिन धरि दबाई चलल, मुदा हिनका स्वाश्थमे कोनो उतार चढाव नै भेल। उल्टे कमजोरि तेहेनकेँ बढि गेल कि बिछान परसँ उठब बैसबमे समस्या भऽ गेलनि, खोराकि सेहो साफके कमि गेल। चेहरा उसठ भऽ गेल, पेट साफे बैठके पीठमे सटि गेल। बरहिया लैग गेल। आय शिवचरण भोरे सुति उठिकेँ बाध दिश बिदाह भऽ गेला। पार्वतीकेँ बुझना परल, साईत हिनकर मन नीक भऽ गेल अछि। टोकैत पुछलखिन-

"कतए बिदाह भऽ गेलिय भोरे भोर?"

शिवचरण सूखले मने बाजल-

"बाध दिश जायछी, बहुते दिना भऽ गेल हेन खेतकेँ देखला।"

शिवचरणकेँ पाछुलागल पार्वती पीठे पर बिदाह भेली। दुनु बेक्ति सभटा खेतक आरि पर जाऽ धान लागल फसलकेँ लहलहाएत हरियालि देखि हर्खित होयत बात करै छथि। शिवचरणश्

"देखु! ऐ बेरि सभटा गाछ जेना हलैशकेँ उगलै हेन।"

पार्वतीश्

"एहन रहत तखने ने?के जनैए मोसमक मियाद? कहि रौदी नै भऽ जा!"

शिवचरण उझटिकेँ बाजलश्

"छोरूने! काल्हि कि हाएत कै जनैए? एखनि नीक अछि तऽ बुझिलियन आगुवो निके रहत।"

उपर आसमान मे कड़िया मेघ आ सूरुजकेँ बीच नुका छिपिक खेल भोरेसँ चलैत रहेन। ऐ खेलमे कड़िया मेघक जीत पक्का बुझना गेल रहेन। दक्षिणश्पूबक कोणसँ कड़िया मेघक एकटा खूब तरगर अछाड़ अन्हार केने रमकल आएल। जे हरहराएत आ फटकार लगाबैत,जे जते कतौ छिही अपन अपन घर जाए जो, आय हम्मर दिन छौ हेन।' शिवचरण आ पार्वती मेघक उनटल मियादकेँ भाँप, घर दिश बिदाह भेलनि। मुदा घर पहुँचैत धरि दुनु बेक्ति नीक जँका भीज गेलनि।

गायक दूध आ रोटी खेनाइक पछाति दबाई लेलक आ शिवचरण दरबजा पऽ जा बैसल। पार्वती बिछान नने एली आ भिंए मे बिछा लेट जाएले कहलनि। शिवचरण लेट तऽ गेल मुदा छटपट कछश्मछ करैत पेटमे दर्द कहि कहरे लागल। दर्द बढैत गेल, घंटे भरिक पछाति शिवचरण असहाय होयत, सुधि बुधि सभ चैल गेल। सौसे आंगनमे कना रोहटि शुरू भऽ गेल। अरोसि परोसि सभ जमा भेलनि। शिवचरणक भातिज मुंगालाल ई हाल देखि कहैए

"काकी! कि देखै छिऐ! उठाव! डाक्टर ले लऽ चलु।"

मुंगालाल ह्रष्ठ पुष्ट जबान रहथि। हंाय हंायकेँ कन्हाप उठेलक आ निर्मलीकेँ डा. के. एन. गुप्ता लंग लऽ गेल। पार्वती आ पारो दुनु माय बेटी पाछुसँ हाय बाप करैत दौरल एली। डाक्टर मरीजकेँ परीक्षण केलाक पछाति इमरजेन्सी दबाई लाबैक आदेश देलखिन आ पुछैएश्

"कोन डाक्टरसँ इलाज कराबैत रहियनि?"

पार्वती मँुहप नुआ लऽ सभटा बात बतेलखिन। फेरि डाक्टरसाहेब बाजैएश्

"सभटा उल्टा पुल्टा दबाई दऽके पेसेन्टकेँ जान मारि देलक हेन। खराबी किड़नीमे अछि आ दबाई खाली ब्लड प्रसर के दकलक हेन।"

नसमे पानिक बोतल आ तीनटा सूई आरो दबाई देलाक पछाति डाक्टर साहेब एकटा डिलेवरी पेसेन्टकेँ होमकाँल पर चैल गेलखिन। कनीए कालक पछाति शिवचरणकेँ मुँहसँ गौंज पोटा चलए लागल। हिचकी जोर जोरसँ उठि गेल, देह हाथ तनाए गेल आ ठण्ढा भऽ गेल। फेरि एकबेर कना रोहटि पसरि गेल।

-ललन कुमार कामत

ISSN 2229-547X VIDEHA

लघु कथा-

भोला

:: ललन कुमार कामत

आम तरहसँ देखल जाइए जे सतमाइक खिधांश जोर-साेरसँ लोग करैए। अगर कोनो बच्चाकेँ सतमाए रहैए तँ ओकरा लोकक सहानुभुति रहैत अछि। मुदा कोनो सोतेला बापकजिकिर केतौ होइत नै देखल जाइए। जखनि कि भेद-भाव दुनूठाम होइत अछि। भाेला अपन माए दुखनीक दोसर बिआहमे पछिलगुआ बनि आएल रहए। करम बुड़ल छेलनि दुखनीकेँ जे बिआहक दसे दिनक पछातिबिअहुआ घरबलाक देहान्त हेजाक बेमारीसँ भऽ गेल छल। पतिक गुजरलासँ दुखनीक नाता ओइ घरसँ टुटि गेल। मुदा आशाक किरण नअ मास अनहरिया बीतला पछाति भोलाक जनम भेलासँ फेरि चमकि उठल। दुखनीकेँ लागल जेना बेटाक जनमसँ बिअहुआ घर चिकरि कऽ सोर पाड़लकनि मुदा ईहो इजोत गहनलगुआ भऽ गेल, चानपर दाग लगि गेल। सोसराक लोक दुखनीकेँ स्वीकार नै केलक, कियो कुलच्छनी तँ कियो कुलनासनी कहैत सदाक लेल ठाेकर मारि देलक। तइ दिनमे समाज आकि विज्ञान ओते प्रगति नै केने छल जे डी.एन.ए आकि आरो जाँचसँ साबित करितै जे भोला दुखनीक जाइज सन्तान छी।

समैक पहिया नाचैत गेल। दुखनी एकटा बेटारूपी धनसँ सबुर केने जीनगीक सुख-दुखसँ तालमेल बैसबैत पाँच बरख काटि लेली। आब टोलामोहल्ला आ समाजक लोक सभ दुखनीकेँ दोसर बिआहक गप-सप करए लगल। होइत-होइत खुर्शेला गामक मोहन दाससँ चुमौन सम्पन्न भेल, जेकर एकटा बेटी सोसरा बसै छेली आ एगो बेटा-पुतोहु भीन भऽ कऽ रहै छल। मोहनाक थोरबहुत खेत आ चारिटा भैंस रहनि जेकर दूध बेचि गुजर-बसर करै छला। चुमौन भेलासँ दुखनी-मोहनाक जीवन हरिअरी तँ घुमि आएल मुदा भोला जे पिताक खतिर जनमसँ बेलल्ला छल, ओकरा पिताक सुख नसीब नै भऽ रहल छेलैजे मोहनासँ भेटबाक चाही।

भोलाकेँ बालपनमे पिता भेटल, मुदा ऐ अबोध नेनाक जरूरतसँ हिनकर सतबाप साफ कऽ अनभिग छथिन। मोहनाक चुमौन करैत धरि दूटा कमौआ प्राणी घर आएल, दुखनी पत्नी बनि घर-आँगनक काम-काज सम्हारली आ भोला पोसल-पालल बेटा रूपमे भैंसक चरबाहि आ घासो भूसामे लगाैल गेल। दुखनीक इच्छा छेलनि जे भोलाकेँ पढाबी-लिखाबी, तइ बास्ते गामक स्कूलमे नाओं लिखा देली। मुदा मोहनाक इच्छा नै छेलनि जे भोलाकेँ पढाबी। हिनक खिसियाएल रबैया भोलाक प्रति देखि दुखनीक सस-बस नै चलि सकल। ऐ खातिर बेर-बेर भोलाकेँ डाँट-फटकार मोहनासँ पड़ैत रहै। दुखनीकेँ तरे-तर टुसकेलापर भोला कहियो-काल नुकाछिपा कऽ स्कूल जाइत छल मुदा ई बेसी दिन नै चलि सकल। भोला एकदिन स्कूलसँ अबिते धरि मोहनाक तामसपर चढ़ि गेल। मोहना तमसाएलदाँत पिसैत हूरकैत बजला-

> “बड़ नबाबक नातिछिही! केतौ बैस कऽ बाप-संगे कौड़ी खेलैत हेबही आ कहै छीही पढ़ैले गेल छेलिएे! मरि किए नै गेलेँ ओतै? जब घास-ले जाइ छिही तँ तोरा घासे नै मिलै छौ। कहबी खुरपी भोँथ भऽ गेलै तँ बेँटे ढील्ला भऽ गेलै। पचासटा बहन्ना बनबै छँह। हट नजरिपर सँ झलमुहाँ!”

पाइरक चप्पल निकालि कऽ झट-झट सिन पीठपर बरसाए देलखिन। भोला धम्म सिन ओतै बैसि गेल आ छट-पटाइत बोमी पाड़ि कानए लगल। मोहनाक अपन बेटा नै रहनि तँए ममत नै, मुदा माता कुमाता नै भऽ सकैए, दुखनी दौगल एली आ भोलाकेँउठा-पुठा कऽ पजिऔने अँगना लऽ गेली।

पुरुष प्रधान समाजमे स्त्री शब्द केतेक असुरक्षित होइत अछि से दुखनीक हालतसँ बूझल जाए सकैए। स्त्रीकेँ अपन अर्धांग्नी बनेलोपर हुनकर मति मोहि कऽ पुरुख अपना अनुकूल बना लैत अछि। रसे-रसे धरक वातावरण बदलैत गेल आ मोहनाक आकर्षण दुखनीपरसँ घटैत गेल। धरक काम-कजक अलाबे माल-जाल आ

ISSN 2229-547X VIDEHA

खेतीओ-पथारी दुखनीक माथपर बजरि गेल। मोहना भिनसरे भैंस दूहि, दूधक डोल बजार लेने जाइए, अनुमण्डलक पजरेमे दुर्गा दासक होटल अछि, जइमे दूधक उठौना लगल अछि, एतए एला पछाति गप-सक्का संगे गाजाक लत सेहो फुड़बैत एक्केबेर दुपरियामे होइत घर अबै छथि।

होटलक मालिक दुर्गा दास बेदरूकिया नाेकरक खोजमे रहथि जेकर जिकिर ओ मोहनासँ केलखिन-

"आठ-दस बर्खक बेदरा काज करैबला गाममे जँ भेटत तँ नने अबिहऽ तों तँ जानिते छहक होटलमे खेनाइ-पीनाइक कोनो कमी नहियेँ रहै छै। लूइरो-बूइध सीखतै आ पोसलो-पाललो तँ जेबेकरतै?"

मोहनो भरोस दैतकहलखिन-

"अच्छा देखै छिऐ, नजरिपर एतै तँ नेने एबऽ।"

घर एलापर बेरमे मोहनक खियाल बेदरूकिया नोकरपर गेल, मने-मन सोचैत एला जे केकरा कहक चाही ऐ वास्ते? एकाएक मोहनाक धियान भोलपर गेल आ सोचए लगल। अन्तमे ई विचार केलनि जे भोलाकेँ होटलमे लगा देब सएह नीक रहत। घर अबिते दुखनीकेँ गप-सप्पक झाँसा दैत कहलखिन-

"भोलाकेँ बजारमे नोकरी लगा दइछिऐ। घरमे खाइ-पिबैक दिक्कत भऽ रहल छै। बजारमे रहतै तँदूटा लूइरो-बुइध सिखतै, गाममे देखै छिऐ ने बौनाएल जाइए?"

दुखनी ऐ बातसँ राजी नै छेली मुदा मोहनकजिद्दक आगू हारए पड़लनि। अगिले दिनसँ भोला दुर्गा दासक होटलमे काम करए लगल। ऐ अबोध बेदराक वोनबाससँ एकटा आरोेनाक मौलिक अधिकारसँ रोकि देल गेल। सोतेला माइक खिद्धांश तँ होइत अछि मुदा सोतला बापोक हेबक चाही जेकर हकदार मोहन भेलखिन। स्कूली शिक्षा तँ बाल-बोधक मौलिक अधिकार होइत अछि जे आम लोककेँ समझमे नै आबि रहल अछि। परिणाम स्वरूप, अखनो बाल-श्रम अपना देशमे चरमपर अछि। गरीब घरक नेना-भुटका सभसँ बलपूर्वक आकि जोर-जबरदस्ती भारी-भरकम काज जेना स्टोर उत्पादनमे जूताक पाॅलिश, दोकानमे साफ-सफाइ, भोजनक ढाबा आ होटलमे जबरन बरतन-बासनक माजैक काज,चाह दोकानपर गिलास धोइक अलाबे आनो अनोपचारिक क्षेत्रमे काज कराएल जाइत अछि। घरेलु काज करैले सेठ-साहुकार सभ काम-काजी बेदराकेँ घरमे नुका कऽ राखैए, जइसँ सरकारी श्रम निरीक्षक आकि मीडिआक नजरिसँ बँचि सकए। ई सभटा काज न्यूनतम मजदूरीपर बेदरा सभसँ कराएल जाइए, बुझितो जे ई कानूनी जुलुम अछि। एकरा अनुचित आ शोषित मानल जाइए तैयो बहुत गरीब परिवार अछि जे अपन अबोध बेदराक मजुरीक सहारे भरन-पोषन करैए।कानूनो बनल अछि जे अठारह बर्खसँ कम उमेरक बालक मजूरी नै कऽ सकैए। मुदा कानूनक अनदेखी कएल जाइए आ भोला सनक नअ बर्खक बेदरासँ सतरह-सँ-बीसघण्टा काज कराएल जाइत अछि।

दुर्गादासक होटलमे अनुमण्डल आ बेंकोक स्टाफ जेना हाकिम, किरानी, चपरासी आ आनो भी.आइ.पी सबहक चाह, नस्ता, कल्लौ बनैए। किछु महानुभावक डेरापर चाह,नस्ता, खेनाइ पठाएल जाइए। दुर्गा दास सोभावसँ एक नमरक पोल्टिसबाज छथिन जहिसँ कामकाजी बेदरा सभसँ गप मरि काज करबै छथि। जरूरी पड़लापर डाँट-फटकार आ लप्पर-थप्परसँ सभकेँ सकपकेने रहै छथि। होटलमे छहसँ दस बर्खक आराे चारिटा बाल-मजदूर काज करैत छल। भिनसरबाक चारि बजैत धरि सभटाकेँ हुरपेट कऽ जगाएल जाइए आ बरतन-बासन, चुल्हा-चौकीक माँज-मजबैल, निपा-पोतीसँ झार-पोछक काजमे लगाएल जाइए। कोइ चाह लऽ डेरे-डेरा पहुँचाबैए तँ कोइ जलखै, खेनाइ बनाबैमे लगि जाइए।

कखनो-काल सभ बेदरामे कोनो-कोनो बातपर टोना-मानीसँ झगड़ा-झाँटी भऽ जाइत अछि, तइ घड़ीमे दुर्गाकेँ अपन सकत मियादि देखबऽ पड़ै छै, जारनि लऽ कऽ झँटियेबो करैए। खेनाइमे सभटाकेँ बसिया भात, टटाएल रोटी, महकौआ तीमन आ बँचल-खूचल तरकारी दैत बजै छथिन—

"रै छौड़ा सभ अते नीक चीज तँ तोहर बापो-ददा नै खेने हेतौ। खाइ जाइ जो मन लगा कऽ।"

ISSN 2229-547X VIDEHA

दुर्गा दासक एकलौता बेटा- अमर- दरभंगामे पढ़ै अछि। जहिया कहियो ओ गाम अबैत अछि तँ जाइ घड़ीमे टीसनपर पहुँचबैक जिम्मा भोलेकेँ रहैत अछि। आइ अमर दरभंगा विदा भेल। दस-दस किलोक गहुम आ चाउरक मोटा भोलाक माथपर आ कन्हापर बैग लटकेने टीसन मुहेँ विदा भेल जे करीब कोस भरि हटि कऽ अछि। रस्तामे भारीसँ भोलक कन्हा-पजरा ऐंठने जाइत रहै मुदा गाड़ी छुटैक डरे केतौ जिराइओ नै सकल। टीसन पहुँचिते रेलगाड़ी ससरऽ लगलै। अमर लपैक कऽ पौदान पकड़ि चढ़ल। भोला नीचासँ सभटा मोटा-चोटा आ बैग जेना-तेना अमरकेँ पकड़ा आ अपन भाड़ उतारलक। भोलाक माथक बोझ उतरिते मन हल्लुक हुअ लगलै, मुदा घुरन्ती-डेग नै उठि रहल छै भोलाकेँ। मन भेलै किछुकाल जिरा ली। कन्हा आ गरदनि सेहो ऐंठने जाइत रहै। गाछक चबुतरापर धम्म दऽ बैस कऽ हाँफए लगल। किछुकाल बैसला पछाति आलस आबि गेलै आ ओतइ ओंघरा कऽ सुति रहल। साइत एते निचेनक नीन कहियो नै सुतल छल। ओ नीनक महासागरमे हेला मारऽ लगल। चारि घण्टाक कड़गर नीन खींचला पछाति जखनि गाछक छाहरि घुसकि कऽ दूर हटि गेल आ देहपर दुपहरियाक रौद लागए लगलै तखनि जा कऽ आँखि खुजलै। भूखो जोरसँ लगि गेल रहै आँखि मिरैत होटल दिस विदा भेल।

ओमहर दुर्गा दास तामससँ आगि अंगोरा होइ छला। भोलाकेँ देखिते मातर तरबामे लहरि दिअ लगल, गारि-बात दैत घौलाइत हूरकैत भोलाकेँ कहलखिन-

"रे सार! गेलही तँ मरि गेल रही? की बाप पकड़ि लेने छेलौ? भुख लगलौ तँ दौगल एलही। नमक हरामी कहीं कऽ! मुलुर-मुलुर केना तकैए सार!"

बगलसँ करमीलक छड़ी उठा आ भोलाक पीठपर सटाक-सटाक खिंचए लगलखिन। भोला ओतै तिलमिलाइत लूद सिन बैसि रहल आ बाप-माए चिचियाए लगल-

"गै माएऽऽ... हौ बापऽऽ...मरि गेलियौ गैऽऽ... माए गै माएऽऽ..."

खिसियाले मुहेँ दुर्गा दास फेरि बजला-

"सार तूँ हमरा होटलमे टपि नै सकै छेँ। जो जइ बाप लग जेमे। देखै छियौ तोरा के रखै छौ आ के खेनाइ दइ छौ।"

घण्टा भरि भोला ओतै कनैत रहल। रहि-रहि कऽ दुर्गा दास हूरैक-हूरैक मारैले छुटैत रहथिन आ बजैत रहथिन-

"भगलैँ कि नै सरबा? एने की टक-टकी देने छीही? आब खाले? टपऽ तँ देबौ नै आ खेनाइ के देतौ? चलि जाइत रह जतए जेबाक छौ।"

भोलाकेँ बुझना गेल आब निश्तुकी नै रहए देता आ ने खेनाइए भेटत। उठि-पुठि कऽ कोसी प्रोजेक्टबला खरंजा पकड़ने एस.डी.ओ साहेबक अवास दिस विदा भऽ गेल। मन्हुआलए-सन्हुआलए आँखिक नोर पोछैत भोला एस.डी.ओ.क अवासक आगूसँ जाइत छल तखने भीम बहादुरक नजरि भोलापर गेलनि। भीमबहादुर एस.डी.ओ साहेबक भनसिया, जे दयालु प्रवृतिक नेपाली पहाड़ी जातिक छथि। बहादुर भोलकेँ जानिते रहथि पुछलखिन जे की भेलौ, किए कनै छीही, केतए जाइ छेँ? भोला हिचैक-हिचैक कऽ सभटा बात बतेलक-

"हमरा नै रखतै। मालिक कहलखिन भागि जो, नै रहए देबौ।"

भीमबहादुरक उमेर पचास-पचपनसँ कम नै हेतनि मुदा खुशमिजाज आ दयालु प्रवृतिक लोक छथि। भोलाकेँ केम्पसक भितर लऽ गेलखिन आ खाइले दूटा रोटी संग कनी तरकारी देलखिन जे बँचल छेलनि। भोला भोरुके खेलहा, भूखसँ लहालोट हरबे करए। मुदा ऐ रोटीक पैनठेगसँ देहमे हूबा एलै। किछुकाल धरि ओतए बैसल रहल। एस.डी.ओ पाठक जीकदुनू सन्तान नन्दन सात बर्खक आ नेहा चारि बर्खक अछि जे केम्पसमे बैट-बौल खेलाइत रहए। भोलो दौग-दौग कऽ संग दिअ लगल। साँझ होइत धरि पाठक जीक जीप केम्पसमे प्रवेश

केलक संग लगल किछु गाम-घरक नेता लोकनिक हुजुम सोहो जुटए लगल। गप-सरक्काक बीच सभ नेतागण अपन-अपन काज करा विदा होइत गेला। बीच-बीचमे पाठक जीकनजरि तीनु नेनापर सेहो जाइत रहनि जे प्रसन्नचित मुद्रामे खेलैमे मग्न अछि। भोला एस.डी.ओ साहैबक कार्यालयमे चाह पहुँचबैले जाइत रहनि तँए चिन्हतो रहथिन। मुदा भोलाकेँ एतए देखपाठकजी दुविधामे छला।पाठकजी बहादुरसँ पुछलखिन-

"बहादुर, ई लड़का तँ दुर्गादास-होटलक लगैए, ई एतए केना आएल?"

भीमबहादुर सभटा बातक जानकरी दैत आग्रह केलखिन-

"साहैब, धिया-पुता जाइत छिऐ, भगा देने छै, राति-विराति केतए जेतै आइ भरि एतै रहे दैतिऐ तँ नीक होइतै।"

पाठकोजी नेक विचारक लोक, हँ भरैत कहलखिन-

"रहऽ दहक की हेतै? धिये-पुता तँ िछऐ।"

बहादुर गरीबीक दिन देखने। तँएमनमे गरीब लाेकक प्रति दजा आ सहानुभूति भरल छन्हि।

बहादुरमे दूटा नीक गुण अछि, पहिल ई जे जब केतौ भूखलकेँ देखै तँ खेनाइक आग्रह जरूर करैत, दोसर ई जे दोसरक बाल-बोधकेँ अपना जकाँसिनेह दैत छथिन। एस.डी.ओ- पाठकोजी-तहिना मिलनसार आ दयालु प्रवृतिक लोक छथिन, तँए दुनू गोटेमे नीक जकाँबनै छन्हि। भिनसर भने बहादुरक दैनिक काजमे भोलासंग दिअ लगल। दस बजैत पाठकजी ऑफिस विदा भेला। बहादुर अपने संगे भोलोकेँ जलखै करबैत गपसप्पमे पुछलखिन-

"होटल धुमि कऽ जेमे की गाम?

भोला सकपका गेल, किछु नै बाजल,मुदा बहादुर ऐ चुप्पीकेँ बुझै खातिर फेर पुछलखिन-

"होटल जेबाक मन नै होइ छौ?"

भोला मुँह लटकेने बाजल-

"नै जेबै, दुर्गा मालिक बड़ मारै छै। खेनाइओ भरि पेट नै दइ छै आ भगाइओ देलक, कहलक आब तोरा नै रखबौ।"

बहादुर-

"तूँ अपना बापकेँ किए नै कहै छी?"

भोला-

"हमर बाबा एक बरखसँ दूध लऽ कऽ नै अबै छथिन। दुर्गा मालिक कहलखिन, बाबू सबटा भैंस बेचि लेलकौ।"

बहादुर-

"माइअो भेँट-घाँट करैले नै अबै छौ?"

भोला-

"भेँट नै केलकै। एकबेर खजुरी कका दिअए समाद पठेने रहै भेँट करि जाइले। मुदा दुर्गा मालिक नै जाए देलखिन आ हमरा गाम देखलो नै छै।"

ISSN 2229-547X VIDEHA

एकबेर फेरि बहादुरकेँ भोलापर दया लगलनि, जे कि मनुखक मूल सोभावो छी। ओना तँ सभ धर्मक पोथीमे बताैल गेल अछि, जे लोकनि कनैत-कल्पैत नेना-भुटका, भूखल, बेमार आ बूढ़-पुरानपर दया-दरेज नै करि सकैए, ओकर ई मनुखक जीनगी बेकार होइत अछि। मनुखक पुनरावृतिक लक्षण अछि, जनम भेनाइ, खेनाइ-पिनाइ, पलनाइ-बढ़नाइ, बिआह-दानसँ बंशबृद्धि करैत परिवारकेँ आगू बरहेनाइ आ फेर मरि जेनाइ। ई जीवन तँ पशु आ पक्षीओ जीबैए। तखनि मनुख आ जानवरमे की फरक रहत? दया मनुखक सभ गुणमे श्रेष्ठ अछि जे मनुखमे रहबाक चाही।

भीमबहादुरक मनमे विचार उठल, साहेबसँ गप करि भोलाकेँ अहीठामक काजमे रखि लेब तँ एकटा बेदराक उपकार भऽ जाइत! साँझ पड़ैत पाठकजी एलखिन। काजसँ फूर्सत भेला पछाति बहादुर पाठकजीसँ बिनती करैत भोलाक खातिर गपकहलखिन जेकरा पाठकजी स्वीकार केलकिन।

भोला घरक काजमे संग-साथ दिअ लगल। मौका भेटलापर नन्दन-नेहा संगे पढ़ैओले बैसि जाइत रहए। कनी दिन बीतला पछाति बहादुर भोलाक माए-बाबूकेँ समाद पठेलखिन, भेँट करैले।

डेढ सालसँ दुखनी बेटाक सोगमे चिन्तीत छेली। मुदा ई खबरि जे भोला एस.डी.ओ साहेबक घरमे काज करैत अछि, सुनि सुप सन कलेजा भेलै। अगिले दिन दुखनी दौगल एली। दू बरिखक ापर भोलाकेँ देखिते दुखनीकेँ खुशीक ठेकाना नै रहलै। गप-सपसँ पता लागल जे भोलाक सतबाप, मोहनाभैंसपर सँ खसि पड़ल आ डाँर टुटि गेल। पछाति सभटा भैंसकेँ बेचए पड़लै। तहियासँ आइ तक माेहना बेमारे रहै छथि, कोनाे काज-राज हिनकासँ नै भऽ रहल छन्हि।

भेँट-घाँट भेला पछाति दुखनी गाम दिस विदा हुअ लगल मुदा एस.डी.ओ साहेबसँ भेँट करैत निहोरा केली-

"हूजूर, आइसँ अहीं ऐ निभोगाक माइ-बाप छिऐ। अहींक नून खा कऽ एकर भाग चमकतै।"

पाठकजी भरोस दैत कहलखिन-

"भोलासँ अहाँ निफिकिर रहू। खर्चा-पानीक दिक्कत हएत तँ हमरा खबरि करब।"

पाठकजी भोलाक हाथे पाँच सए टका आ एक सेट कपड़ादुखनीकेँ विदागरीमे देलखिन। दुखनी हँसी-खुशीसँ गाम दिस विदा भऽ गेली।

सम्पर्क-
ललमनियाँ, मरौना, सुपौल।
गोल इंग्लिश गार्डेन निर्मली।


ललन कुमार कामत

लघु कथा-

अप्पन माए-बाप

सुनील जीकेँ दूटा सन्तान। सौरभ दस सालक जे पाँचमा क्क्षामे आ छोटका सुमन छह सालक जे पहलामे मेडोना स्कूल, कटहल वाड़ी दरभंगामे पढ़ैए।स्कूल घरेक बगलमे छै। सुनीलजी अकाशवाणी दरभंगामे नौकरी करै छथि।

हम सुनील जीक दुनू बच्चाकेँ घरपर जा ट्यूशन पढ़बै छी। हुनकर कनियाँ मंजू हरिदम बच्चाक कपड़ा-लत्ता, वर्तन-बासन आ आनो-आन घरक कामकाजमे ओझराएल रहै छथिन। सुनीलजी नौ बजे भोरे निकलै छथि अपना काजपर। दू बजे खेनाइ खाइले अबै छथि। फेर रातिमे दस बजे घर अबै छथि।

चारि बजे बेरू पहरमे हम पढ़बैले सभ दिन जाइ छी। आइओ गेलौं। कनीए काल पछातिमंजू चाह लऽ कऽ हमरा लग एली। चाहक कप पकड़ा बच्चाक बदमाशीक उपराग कम मुदा काजकबेस्तताक पोथी खोलि छनेमे संसारक परेशानीक पाठ पढ़िगेली। फेर काजमे एना लागिगेली जेना टाँग-पर-टाँग नै पड़ैए।

छुट्टीक समैमे सुनीलजी सेहो घरक कामकाजमे बेस्त रहै छथि। दुनू गोटेक परिवारक प्रति समरपन देखि हमरा बुझाइत रहैए जे ऐ छोट परिवारक अलाबे हिनका सभकेँ ऐ संसारमे किछु ने छन्हि। अचानक गामसँ हुनका फोन एलनि जे हुनकर पिताजी सिरियस छथिन। सुनीलजी आॅफिसमे छुट्टी लेल दरखास दऽ गाम बिदा भेला। गाम जा पिता जीक संग माएकेँ सेहो संगे दरभंगा आनिलेलनि। बाबूजीकेँ असपतालमे डाक्टरसँ जँचबौलनि। डाक्टर कहलकनि-

"अहाँक पिताजी केँ टी.बी. भऽ गेलनिहेन।"

"आब की उपए अछि डाक्टर साहैब?" सुनीलजी पुछलखिन।

"नौ मासक दबाइक कोर्स अछि। देख-रेखमे समैपर दबाइ चलबए पड़त।"

सुनीलजी, आॅफिस जा अदहा दिनक छुट्टी छह मासक लेल दरखास लगा माए-बापक सेवामे लीन भऽ गेला।

कटहल वाड़ी स्थित नीज अवासपर माए-बाबू रहए लगला। मुदा सप्ताहमे दू दिन असपतालमे जाए-आबए पड़नि।

आब मंजू पहिनेसँ बेसी परेशान रहए लगली। एक दिन मंजूक वार्ता हमरासँ भेल। बजली-

"की कहूँ सर, एक्को-रती मन नै होइए जे ऐ घरमे रही।"

हम पुछलियनि-

"किए, की भेल?"

"तेतबे घरक काज तेतबे धिया-पुताक काज आ तैपरसँ माए-बाबूजी माथक बोझ बनिगेल छथि। अपने जे छथि ओ एकाेटा काज नै सम्हारै छथि।"

हम कहलियनि-

"अहिना होइ छै, काम-धाम तँ सभ दिन लगले रहै छै। मुदा माए-बापक सेवा सेहो ऐ जीवनमे जरूरी छै।"

मंजूकेँ जेना हमर उपदेश एक्को-रत्ती नै सोहेलनि। तमतमाइत बजली-

ISSN 2229-547X VIDEHA

"मास्टरजी, हमरा अहाँ नै सिखाउ। अहाँकेँ दुनियाँ-दारीक थाह नै चलल अछि अखनि। सासु-ससुर हमर ओहेन अदरगर नै छथि।"

मंजूक ई बात सुनि हम स्तब्ध रहि गेलौं। मुँहक बात मुहेँमे रहिगेल। संच-मंच बच्चा सभकेँ पढ़बए लगलौं। मुदा मंजू बड़बड़ाइत रहली-

"चौबीस घंटा काजे-काज। सभ अढ़बैए बला। ऐ घरमे रहैक मनएकोरती नै होइत अछि। जेतबे घरक काम-काजसँ माथा दुखाइत रहैए आ तैपर सँ बुढ़बा-बुढ़िया माथ भुकबैत रहै छथि।"

तही बीच बुढ़हाक खौंखी जोस्जोरसँ सुनि पड़ल। खौंखी करैत-करैत बदहाल भऽ कहरि-कहरि कऽ बाजए लगला-

"कनहौलीवाली, सुनीलक माए,केतए छी? ओहू बुढ़ियाकेँ जेना हमरा लग नीक नै लगै छै। जेना हम काटैले दौड़ै छिऐ।"

बुढ़हाक हफनीक अवाज फेर सुनिपड़ल-

"कनियाँ छी हे, लहानवाली, ऐ सौरभक माइ? बाप रे बाप! कोइ ने सुनैए।"

मंजू बड़बड़ाइत घुमली-

"मरबो ने करैए बुढ़ा जे हमरसिरक बोझ हटैत। जानिने कोन पापक फल छी।"

सुनील जीक घरक ई कथा रोजक भऽ गेल। एक दिन अनायास हुनकर घरक हवा एकदम शान्त बुझना गेल। छतक चौकीपर जाजीम बिछौल छल। दुनू बच्चा ओइपर आबि पढ़ैले बैसल। हम पलास्टिकक कुरसी खिंच बैसलौं। कनीए काल पछाति मंजू पलेटमे जलपान आ कपमे चाह लऽ मीठ-मीठ चालिमे मुस्कीआइत एली। हमरा बुझाएल जे आइ मंजूजी तिरपित छथि। इच्छा भेल जे ऐ खुशीक कारण जानी। पुछलियनि-

"भाभीजी, आइ अपने बड़खुश नजरि अबै छी, की बात छिऐ?"

"हँ, खुशी किए ने हएब। आइ हमर अपन माएबाबू गामसँ एला अछि। खुशी तँ सोभाविक छै।"

मंजुक ई बात सुनि खुश तँ भेबे केलौं जे माए-बापक दर्शनसँ सोभाविक खुशी जे हेबक चाही से हिनको भेलनि। मुदा दुख सेहो भेल। दुख ई भेल जे अखिर सासु-ससुरक विषयमे जे मिथिलाक दर्शनमे नारी लेल बतौल गेल छै जे अपन माए-बापसँ बढ़िकऽ सासु-ससुर होइ छै से हिनकामे किए नै छन्हि।OOO

सम्पर्क- ललमनियाँ, सुपौल।

ISSN 2229-547X VIDEHA

 ललन कुमार कामत

लघु कथा-

स्कूलक फीस-

मानस तीन सालक छल तहिये माएक देहावसान भऽ गेलनि। पिताजी गामक मुखिया छथिन। समाजक कहलापर दोसर बिआह केलनि। लबकी कनियाँ थोड़-बहुत पढ़ल-लिखल, सोभावशील, विचारू आ सुन्दर भेलनि। तीन सालमे मुखिया जीकेँ दूटा सन्तान और भेलनि। चन्दन आ नन्दन। नन्दनक जन्मक छह मासक पछाति मुखियाजी स्वयं भगवानक प्रिय भऽ गेला। एकबेर फेर परिवारसँ लऽ कऽ गाम भरिमे शोकक लहरि पसरि गेल।

मुदा मुखियानि शोकक सागरसँ बाहर आबि तीनू बच्चाकेँ लालन-पालनक लेल फेरसँ अपन दिन-दुनियाँमे लीन भऽ गेली। अपना सुइधबुइधसँ बच्चा सबहक बरबरि लार-प्यारसँ पोसैमे कोनो कसरि नै छोड़ै छथिन।

मानस आब दस सालक भऽ गेल। प्राइवेट स्कूलक चारिम कक्षामे पढ़ैए। महिनाक पाँच तारीख तक सभ बच्चा अपन-अपन फीस जमा करैए। लेट-सेट छह तारीख धरि विलम शुल्कक संग जमा करब आवश्यक अछि। नै देने नाओं काटि देल जाइ छै। मानस प्रत्येक महिना अतिरिक्त शुल्कक संग जमा करैत छल। मुदा ऐ मास सेहो नै भेलै। पीठपर पोथीक बैग टाँगि अनजान चालिमे डेल उठबैत, एमहर-ओम्हर तकैत स्कूल दिस विदा भेल। घरसँ लगभग एक किलो मीटर भरि पूब स्कूल छै। बाटेमे मानसक मन थिपर गेलै। आइ तँ छह तारीख छी। मुदा फीस तँ अछि नै। सरजी की कहता की नै।

असमंजसमे पड़ल मानस स्कूलक हाता धरि पहुँच गेल। हातासँ आगू नै बढ़ि बाहरेमे ठाढ़ रहल। किछु काल पछाति आपस घूमि गेल। अगल-बगलमे डबरा-डुबरीमे पहिल मानसुनक बर्खासँ पानिक जमाव सभकेँ देखैत, बेंगक टरटरेनाइ आदिकेँ देखैत-सुनैत लीन भऽ गेल।

ओमहर स्कूलमे सरजी हाजली मिलौला पछाति मानसक अनुपस्थितिपर बजला-

"मानस आइ नै एलौं?"

एकटा बालक कहलकनि-

"आएल तँ छल मानस, साइत बाहरमे हएत।"

सरजी-

"आइ फेर फीस नै अनने होएत।"

फेर वएह बालक बाजल-

"सरजी, अहाँ कहब तँ हम मानसकेँ बजा आनब।"

सरजीक धियान मुद्रापर गेल। बजला-

"जो, आ कहि दिहनि जे आइ जँ फीस नै लऽ कऽ आएत तँ दोबर फीस लगतै।"

बालकक नाओं सौरभ अछि। सौरभ स्थानीय बेवारीक बेटा छी। सौरभ केर घर स्कूलक बगलेमे छै। मानससँ मित्रता छै। मानस केर प्रति सहायताक भाव सेहो रहै छै। सौरभ विदा भेल मानसकेँ तकैले। बाहर जा एमहर-ओम्हर नजरि दौड़ौलक। मानसपर केतौ नजरि नै पड़लै। कनी और आगू बढ़ल। देखलक एकटा गाछक छाँहमे ठाढ़ किछु देखि रहल अछि। देखिते चिकरि कऽ सोर पाड़लक-

"मानस, की करै छी। एमहर आ।"

मानस अवाज सुनि-ताकि लग आबि बाजल-

"आइ हम स्कूल नै जेबौ। सरजीकेँ नै कहिहनि जे मानस गाछ तर अछि।"

सौरभ-

"जौं तूँ स्कूल नै जेमें तँ एतए की करै छीही। घरेपर रहितेँ।"

मानस-

"तूँ नै बुझै छीही। घरपर जँ रहब तँ माइक सैकड़ोप्रश्नक उत्तर दिअ पड़त। घरमे पाइ-कौड़ी नै छै। माए कहलक जे दू-चारि दिनमे पाइ देबौ।"

सौरभ स्कूलक निअमसँ अवगत अछि। जौं छह तारीख तक फीस जमा नै हेतै तँ स्कूलसँ निकालि देल जाइ छै। ई सभ सोचि मानसकेँ कहलकै-

"स्कूलक निअम नै बूझल छौ जे केते कड़ा छै। माएकेँ नै कहने छेही?"

मानस किछु बाजल नै, आ ने किछु फुरेलै। चुप रहल। सौरभ घूमि कऽ स्कूल चलि गेल। ।ooo

सम्पर्क- ललमनियाँ, सुपौल।


ललन कुमार कामत

लघु कथा-

दस हजरिया नोट-

हम अपन इलाकामे जानल पहचानल पेन्टर छेलौं। पेन्टिंगमे बेदरेसँ लगाव रखैक कारण, भाड़ी-सँ-भाड़ी चित्र पल भरिमे बनेनाइ हमरा लेल असान छल।

एकटा लङोटिया दोस्त छल धीरेन्द्र, किराना दुकानदार आ जातिक भूमिहार। बखत-कु-बखतपर हम एक दोसरकेँ मदति निस्वार्थ भावसँ करै छेलौं। एक दोसरकेँ विशुद्ध दोस्त मानै छेलौं। लोक सभ हमरा ऐ दोस्तीकेँ देखि हैरत रहै छल। हैरत ऐ खातिररहै छल जे हमर दोस्त धीरेन्द्र भुमिहार जातिक छल। केते लोग कहैतो छल

"की रौ, भुमिहारसँ दोस्ती केलँह..., ठीकसँ रहिहेँ कहीं भुमिहारी दाउमे फँसलँह तँ बुझियैहनि!"

मुदा ऐ बातपर हम कोनो कान-बात नै दइछेलौं। एकदिन जहिना हम रंगब्रशक झोरा लऽ कऽ केतौ काजपर विदा भेल छेलौं आकि जनक काका दलानपरसँ चिकड़ि कऽ बजा कहलथि-

"रौ, सुन कहै छियौ तूँ जौं भुमिहारसँ दोस्ती केलँह तँ भुमिहारी दाउ एकोटा सिखलेँ आकि नै?"

हमरा जिज्ञासा भेल आ पुछलियनि-

"काका, भुमिहारी दाउ केकरा कहै छै हौ?"

"हम जँ बुझितौं तँ हमहीं ने तोरा सिखा दैतिऔ? लोक बाजै छै जे भुमिहारी दाउ बड़ पेंचिदा होइ छै।"

हम भरि बाट गुन-धुन करैत एलौं 'मुदा ई कोन दाउ छी? जे लोक सभ दोसक संग देखि पुछैत रहैए? से नै तँ, आइ हम दोसेसँ ऐ बिषयमे पुछि कऽ रहब।

दुपहरियाक रौदामे हम कोसी प्रोजेक्टक देवालपर एकटा विज्ञापन लिखैत रही संयोगसँ तखने पाछूसँ मोटर साइकिलक सीटीक अवाज पिपियाएल! हम रंगक डिजाइन बनबैमे मगन रही। मने-मन तामससँ देह बहिर भऽ गेल! 'के एहेन दुष्ट छी जे डिस्टर्ब करैए?' मुदा ताकब केना?जौं ताकब तँ डिजाइन खराप भऽ जाएत। लगल हाथ छोड़ि,ः ताकलौं। अवाक् रहि गेलौं! वएह भुमिहार दोस धीरेन्द्र छल। दोस्तीमे कनी-मनी शैतानी तँ चलिते रहैत छल। मन्द मुस्कान चेहरासँ सेहो छुटल। तैबीच धीरेन्द्रक नजरि पेन्टिंगपर पड़ल आ प्रशंसा करए लगल। मुदा हमर प्रशंसा, जे हमरे मुँहपर बाजल जाइत अछि! नीक नै लगल, अंग्रेजीक एकटा मुहावरा मन पड़ि गेल, 'रेस्ट ऑन वन्स लॉरेल्स' अर्थ अछि, 'अप्पन ख्यातिसँ संतुष्ट नै रहक चाही,' हम विनम्रतासँ कहलियनि-

"दोस, अहाँक ऐ प्रशंसासँ हम खुश नै छी। हम मात्र एकटा छोटका कलाकारछी, खरचा-पानि चलेबा लेल ई काज करै छी।"

तैबीच हमरा मन पड़ल 'भुमिहारी दाउ' पुछलियनि-

ISSN 2229-547X VIDEHA

"दोस, लोक कहैए जे भुमिहारी दाउ बड़ नीक होइछै, हमरो सिखा दिअ।"

धीरेन्द्र पहिले तँ हमरा बातपर धियान नै देलक मुदा बेर-बेर जिद्द केलापर सोचए लगल, कनीकाल सोचि कऽ बाजल-

"दाउ तँ अहाँकेँ सिखा देब मुदा बदलामे किछु दिअ पड़त।"

हम पुछलियहन-

"कथी देबए पड़त? बाजू।"

धीरेन्द्र फेर बजला-

"अहाँकेँ एकटा दस-हजरिया नोटक पेन्टिंग बना कऽ हमरा दिअ पड़त।"

हम बजलौं-

"रूपैआक नोट! दस-हजरिया आ पँच-हजरिया की, जौं पेन्टिंगेसँ बनाएब तँ किए नै? जरूर बना देब। कनीए दिन रूकू फुरसति हुअ दिअ तँ छापि देब।"

पेन्टिंग हमर ईश्वरीय देन छल, बेदरेसँ अनेक प्रकारक चित्र पाड़ै छेलौं, स्कूलमे सरजीकेँ यार-दोस्तक आ संग पढ़ैत लड़कीओ सबहक। बाबूजी सधारण किसान छल,हमर पढाइ लेल पर्याप्त खर्चा नै रहैक कारण अध्ययनक संग उपार्जनक मार्ग अपनौने रहौं। अखनि हम निर्मली आ आसपासक क्षेत्रमे जानल-पहचानल चित्रकार छी। कामक व्यस्तता हरिदम रहैए। ऐ व्यस्ततामे दोसक लेल दस-हजरिया नोट बनेनाइ हम साफे बिसरि गेलौं।

एकदिन हम नगर सेठक दोकानक बगलमे साइन बोर्ड बनबैत रही, तखने धीरेन्द्रक अवाज सुनि पड़ल। काम रोकि गद्दी लग हम ससरि कऽ एलौं, तही समैमे आउरो किछु जानल-पहचानल बेपारी सभ पहुँचल छल। धीरेन्द्र जोरसँ सभकेँ सुना कऽ हमरा कहैए-

"की दोस, हमर काम नै हेतै?"

हम चौंकि गेलौं जे हमरा कोन काम कहने छथि! पुछलियनि,

"कोन काज?"

"वएह दस हजारबला!"

हमरा मन पड़ि गेल दस-हजरिया नोट! मुड़ी हिला स्वीकृति दैत कहलियनि-

"ओऽ हाँ, हेतै, हेतै, किछुए दिन और रूकू।"

सेठजी नोटक गड्डी गीनैत-गीनैत, चेश्माक भीतरे-भीतर, रूपैआक बात सुनि हमरा दिस ताकए लगल। हम चुपचाप, काम करए लगलौं। हमरा एला पछाति,धीरेन्द्र सभ लग बाजल, जे 'ई पेन्टर हमर दोस छी, हमरासँ दस हजार टाका लेने अछि, केतेक महिना भऽ गेल, मुदा टाका मांगलापर, आइ-काल्हि करैत, समए काटैए।'

समए बीतैत गेल, छह महिना-साल भरिक बाद, फेरि दोसर बेपारीक दोकानपर दस हजारक तकेजा केलक। हम दस-हजरिया पेन्टिंगक नोट समझि टाड़ि देलौं। मुदा हमरा गेलाक पछाति धीरेन्द्र सभ लग बाजल फिरै छल जे साँचेमे ई हमर रूपैआ लेने अछि।

ऐ बातक दू बरख भऽ गेल। जेतए-तेतए लोक सभ हमरा कहए लागल-

"धीरेन्द्रक रूपैआ किए ने फड़िया दइछिही! दोस-बोनक पैसा एते-एते दिन रखनाइ नीक बात नै छै।"

पहिले तँ हम असमंजसमे रहौं मुदा, जखनि पता चललजे धीरेन्द्र दस-हजरिया पेन्टींगक बदलामे दस हजार टाका लोक सभ लग बाजल फिड़ैए, हम अवाक् रहि गेलौ! केतेक गोटेकेँ समझेबाक परियासो केलौं ई बात, मुदा जेकरे कहिऐ वएह, बुड़िबक बनबए लगल-

'कलाकार भऽ कऽ एहेन नीयत तोहर नै होबा चाही।'

हम चिंतित भऽ सोचए लगलौं, 'ई दोस्त नै छी, दुश्मन छी, एते भाड़ी फेरामे पड़ा देलक! केतएसँ एते टाकाक ओरियान करब!' हमर ओकाति हजार टाका जेना लाख टाकाक के बराबरि छल। बिना जमीन-जथा बेचने दोसर उपए नै छल।

ISSN 2229-547X VIDEHA

कनीए दिनक पछाति, पंचैती भेल, पंचक फैसला भेल, कट्मिारि कऽ दू हजार सुइदकक संग बारह हजारक देनदारी ठहरौल गेलौं। लोक सभ बाजए नै दैत छल। जीवनमे एहेन बेज्जती कहियो नै भेल रहए। दस दिनक समए देल गेल।

टाकाक ओरियान नै भऽ रहल छल। कोनो गुंजाइश नै देखि, एकटा उपए सूझल, जमीन बेचु नैतँ, भरना लगाउ। एक बीघा जमीन भैयारीक फाँट पड़ल छल। बेचब तँ फेरकीनल नै हएत, से नै तँ भरने लगा देबाक चाही।

हजार टाकाक दरसँ बारह कठ्ठा खेत भरना लगेलौं, रूपैआ लऽ कऽ दोसक घर पहुँचलौं। दलानपर कियो नै छल असगरे बैस गेलौं, दोस्तीनीकेँ खबरि गेल। कनीकालक पछाति, दोस्तीनी एक हाथमे पानिक लोटा आ दोसर हाथसँ घोघ तानि, अदहा मुँह झाँपल अदहा देखाइत, आगूमे पानि बढ़ा देली। तामससँ तँ हमर देह बहिर छल, सोचने छेलौं जे दोसकेँ किछु कहबनि, मुदा की करब! चोटपर दोस्तीनी पड़ि गेली। भाड़ीए मनसँ कहलियनि-

"दोसकेँ बजाउ आ कहियन जे अपन टाका लेता।"

कनी काल पछाति धीरेन्द्र हँसैत-हँसैत दलानपर एला। ई हँ◌ॅसी, हमरा हरियाएल घापर, नूनक लहरि जकँ◌ा लागल। चुप चाप रूपैआक गड्डी देलियनि, गिनला पछाति फेरसँ हमरे हाथमे धराऽ देलनि। हम चुपे छेलौं मुदा धीरेन्द्र बाजल-

"दोस, याद करू। अहाँ हमरा कहने छलिए◌े ने भुमिहारी दाउ सिखबैले? यएह छिऐ भूमिहारी दाउ।"

एकबेर फेर दोस्तक ऐ बर्तावसँ हम चकित रहि गेलौं।

(लोक कथाक पुनर्लेखन)


ललन कुमार कामत

लघु कथा-

लगन

गोनर बेदरेसँ संगीतक प्रेमी अछि। दिवाली, दशहारा, सरोसती पूजा आ आनोआन अवसरिपर गाममे नाटक होइक परचलन अछि। मुदा गोनरकेँ ओइ सभमे मौका कमे मिलैए। मौका ओकरे पहिल बेर मिलैए जे ओइमे चन्दा दइए। गोनरक पिता साधारण किसान छथि। गोनरक पिताक दोस्त देबन पंडित गाममे कीर्तनियाँमण्डली चलबै छथि, तँए लोकसभ गबैया कहै छन्हि। गोनरकेँ संगीतसँ लगाउ देखि पिताजी केतेक बेर कहै छन्हि-

"गोनर, दोसक ऐठाम जा कऽ घड़ी-घंटा हैरमुनियाँकिए ने सीख अबै छँह?"

आइ स्कूलमे शनिचराक पछाति सरजी गोनरसँ गीत गबौलनिआ खुश भऽ खुब प्रसंशो केलनि। स्कूलसँ अबैतकाल बाट भरि गोनर सोचैत आएल जे आइ देबन काकाक घर जा हैरमुनियाँसीखनाइ शुरू करब।

दुपहरियाक टहटहाइत रौदमे, सभ लोक घेरे-घर स्तूल-पड़ल, अराम करैत रहए मुदा गोनर, देबन पंडितक घर बिदा भेल। देबन सभ दिन बेरूपहरमे अप्पन एकलौता पुत्र हरियाकेँ संग कऽ साज-बाजक संग रियाज करैत रहथि। आब गोनरो संग दिअ लगलनि।

सप्ताहे दिनमे गोनर हरिमुनियाँक रीढ़ आ पटरीकेँ नीक जकाँपरखि लेलक आ सा रे गा मा पा पहिलुक धुन बजबए लगल। ई आकस्मिक आ तेज शुरूआत देखि देबन सोचमे पड़ि गेल, 'हमर हरिया बेदरेसँ साज-बाजक संग खेलैत आएल तैयो अखनि धरि एतेक नै सीख सकल!

देबनके डाहक संग पक्षपातक भावना सक्कत भऽ आ अगिले दिनसँ गोनरकेँ दुआरि पहुँचिते, साज-बाज समेटि रखि दैत रहए। एक-दू दिन गोनर जाइते रहल मुदा ओहिना घुमि कऽ आबि जाइत रहए। गोनर उदास तँ होइते रहए मुदा हताष आ निरास नै भेल, तँए संगीतसिखैक जीद्द मनसँ नै गेल।

साँझ पड़ैत सभ दिन, देबन चाह-पान करैले बजार जाइ छल। ई बात गोनर जनैत रहए, तँए झाँ होइते देबनक घर पहँुच कऽ, हरियाकेँ फुसला कऽ साज-बाज पसारि सीखए लगल। मुदा ईहो सीखनाइ तीनेचारि दिनक पछाति स्थाइ रूपे बन्न भऽ गेल। जइ दिन देबन पण्डित दुनू छौड़ाकेँ साज-बाज निकालि सिखैत देखि गेला। कड़गर फटकारो दुनूटाकेँ लगेलखिन आ सभटा साज-बाज समेटि कऽ संदूकमे बन्न कऽ देलखिन।

कहल जाइए जे समए आ लहरि केकरो इंतजार नै करैए। ई बात साँच भेल। गोनर ऐ दसे दिनमे जे किछु सिखने रहए वएह रामवाण भऽ गेल आ सक्कत अधार बनि, तारक गाछ सन बढ़ए लगल। कहल जाइए जे कोनो तरहक बुधि आ हूनर सिखैले निर्धारित समए नै होइए। जेतै-तेतै, चलैत-फिरैत गोनर सुर आ तानकेँ साधैत,

ISSN 2229-547X VIDEHA

गुनगुनाइत धूनमे रमल रहै छल। मुदा साँझ-भोर संगीतक अभ्यास केनाइ अप्पन दिनचर्या सेहो बना लेलक। टोल-टपड़ा आ गाममे जखनि केतौ भजन-कीर्तन आकि नाच-गानक आयोजन होइत रहए तइमे गोनर बड़ी तत्परतासँ भाग लैत रहए। तइसँ गाम भरिमे लोकसभ गोनरकेँ गबैया कहए लगल।

गामक सटले शहर अछि। शहर छोटे सन अछि सुखी सम्पन्न लोक आ पैग-पैग बेपारीसँ लक हाकिमो-अफसर सभ एतए रहै छथि। गोनरकेँ शहरमे केकरोसँ जान-पहिचान नै अछि। एकटा डाक्टर सुरेन्द्र नारायण नामक गण्यमान बेकती छथिन जे महिला कॉलेजमे हिन्दीक सरकारी प्रोफेसर आ संगै-संग महिला कल्याण संस्थानक अध्यक्ष सेहो छथिन। संगीतक प्रेमी रहैक कारण साले-साल सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन करबैत रहै छथि। प्रोफेसर साहैबक एगो बेदरूकिया संगी जे दिल्लीमे नाट्य आ कला विभागक प्रोफेसर छथि ओ रिटायर भऽ अपन पैतृक शहर पहिल बेर एला, तइसँ ऐबेरक आयोजन बड़ जोर सोरसँ भऽ रहल अछि। शहरक गण्यमान लोकसभ जे ऊँच-ऊँ पदपर कार्यरत छथि, सभकेँ कार्यक्रममे शामील होइक बास्ते न्यौंत पठाएल गेल। तइमे ऐबेर टी.वी सीरियलक जानल-मानल कलाकार जीतुराज जोहर सेहो हिस्सा लऽ रहल छथिन।

कार्यक्रमक दिन लगिचाइत गेल। शहरमे जगह-जगह बैनर-पोस्टर लगाएल गेल जे अमुख तिथिकेँ सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन जानल-मानल संगीत प्रेमी सबहक सहयोगसँ भऽ रहल अछि। मुदा गोनरकेँ ऐ बातक कोनो खबरि नै भेल छेलै।

शहरमे स्टेशन चौकपर बबाजी पानबला अछि। हिनका दोकानपर गामक बेसी लोक पान खाइले साँझ-बिहान जाइत-अबैत रहैए। बबाजीकेँ बूझल छन्हि जे गाम भरिमे गोनर सेहो नीक गबैया छी। मात्र दू दिन बँचल रहए, जब गोनर अनायास बबाजीक पानक दोकानपर गेल, बबाजीकेँ मनमे ठहकलन्हि आ जनैक जिज्ञासा भेलनि जे गोनर ऐ कार्यक्रममे भाग लेने अछि की नै। पुछलखिन-

"की रौ तूँ ऐ कार्यक्रममे हिस्सा लेने छेँ किने?"

गोनर जिज्ञासु भऽ विनम्रतासँ पुछलक-

"भैया हौ, के ई कार्यक्रम करबै छै हौ?"

बबाजी बूझि गेला जे गोनर भाग नै लेने अछि तैयो आस्वासन दैत बजला-

"अच्छा रूक, हम परोफेसर साहैबसँ बात करै छी।"

बबाजी मोबाइल लऽ कऽ नम्बर मिलौलनि आ बात करए लगला-

"हेल्लो सरजी, परनाम! हम बबाजी पानबला बजै छी।"

ओमहरसँ जे जबाव पुछने होन्हि, मुदा बबाजी फेर बजला-

"एकटा नवजुबक बड़ नीक गबैया छथि।"

कनीए कालक पछाति फेरि बजला-

"लड़का तँ लोकले छथि मुदा एक नम्मर गबैया छथि!"

कनीए काल रूकि कऽ फेर आग्रहक स्वरमे बबाजी बजला-

"सर! देखियौ कनीए, मौका देल जेबक चाही।"

कनीकाल पछाति फोन डिसकनेक्ट भेल। गोनरकेँ बबाजी कहलखिन-

संस्थापर चलि जो, ओतए बजेलकौ हेँ। पहिने गीत गबबेतौ तब चुनाव हेतौ। अखने चलि जो।"

गोनरकेँ बसंती साइकिल रहबे करए, मुदा बूझल नै छल जे संस्थान छै केतए! तैयो पुछैत-पुछैत बिदा भेल। शहरक दच्छिन, बान्हक कछेरमे उजरा रंगक मकान, अगुआरे-पछुआरे नाना परकारक रंग-बिरंगक फूलक गाछसँ सजल-धजल फुलबाड़ी अछि। सड़कक कातमे साइनबोर्ड लिखल अछि 'महिला कल्याण संस्थान'। गोनर साइकिल नीचाँ धँसा संस्थानक प्राङगनमे पहुँचल, जैठाम दुचक्किया आ चरिचक्किया गाड़ीक पार्किंग लगल छल। बुझना गेल, एते सभकेँ-सभ भी.आई.पी.पहुँचल अछि। कातमे साइकिल लगा, एकटा हॉलमे लोक सबहक सुनगाम देखि भीतर घूसल। प्रोफेसर साहैबक नाओं पूछि गोनर लग गेल आ परिचए देलकनि। परिचए दइते बैसैक आदेश भेटलै। गीत गोनहार, नाच केनहार आ आनो आन कलाक प्रदर्शन केनहार सभ रहए आ रिहलसल

ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' १७६ म अंक १५ अप्रैल २०१५ (वर्ष ८ मास ८८ अंक १७६) मानुषीमिह संस्कृताम्
ISSN 2229-547X VIDEHA

होइत रहए। कनीए कालक पछाति गोनरसँ गीत गबबौल गेल,गोनरक सेलेक्सन नै हेबाक तँ कोनो सवाले नै रहए, आश्वासन भेट गेलै जे एकटा गीत गोनरो गाेत।

गीतक आयोजन शुरू भेल। एक-सँ-एक भी.आइ.पी. सभ पहँुचल छला। विशिष्ठ अतिथि सभकेँ बैसैक बेवस्था मंचपर आ मंचक अगल-बगलमे कएल गेल रहए। ई आयोजन सार्वजनिक चंदा चिट्ठासँ होइत रहए जइमे बड़का-सँ-बड़का पुजीबला लोककधिया-पुता सभ भाग लेने रहए। सिवनाथ सहाय, जीतुराज जौहर आ स्थानीय सिविल अधिकारी सभ मुख अतिथिक रूपमे मंचपर आसीन भेल रहथि।

गायन, वादन आ नृत्य ई तीनु संगीत छी एकर प्रस्तुति रसे-रसे हुअ लगल। हर-एक आदमी जे बाजि सकैए ओ गाइबो सकैए किएक तँ गायन बोलीएकएकटा उन्नत रूप छी। मुदा नव-सिखुआ गाबैया लेल समान रूपसँ निर्देशन आ निअमित रूपसँ अभ्यास जरूरी होइत अछि, जे बेसी-सँ-बेसी बच्चा सभमे ओतेक नै छन्हि। गायन एकटा एहेन काज छी जइमे स्वरक सहायतासँ संगीतमय ध्वनि निकालल जाइत अछि। सुवेवस्थित ध्वनि जे रस दैत अछि आ रसक अनुभूति करबैत अछि वएह संगीत कहबैत अछि। ऐ कलाक प्रदर्शन युद्ध, उत्सव, प्रार्थना आ भजनक समए मनुखक द्वारा गावन आ बजावनक माध्यमसँ कएल जाइत अछि। जे गाबैए ओकरा गबैया, जे नाचै ओकरा नचनियाँ आ जे बजबैए ओकरा बजनियाँकहल जाइए।

प्रोग्राम होइत-होइत अदहा राति बीति गेल मुदा अखनि धरि गोनरकेँ मौका नै भेटल। बखत केर पहिया बढ़ैत गेल आ राति दू बाजि गेल। विशिष्ठ अतिथि सभ घर दिस बिदा भेला, दर्शको सभ रसे-रसे जाए लगल, तब जा कऽ गोनरक नाओं एलोन्स कएल गेल। गोनर स्टेजपर आएल। गोनरक मुँहसँ राग लयात्मक रूपसँ बेवस्थित भऽ संगीतरूपी लहरि समुद्रक ज्वारि जकाँ पसरए लगल। जइ प्रस्तुतिमे कलाक प्रदर्शन हुअए आ जइ कलाकेँ संगीत या मनोरंजन कहल जाए, गोनरके कंठसँवएह सुरीली कंठाध्वनि, ओहिना उत्पन्न हुट लगल जेना वाद्ययंत्रसँ सुसज्जित ध्वनि निकलैए।

जे सभ प्रोग्राम छोड़ि,ु घर दिस बिदा भेल रहए, ऊहो ओतै ठमकिगेल, डेग पाछू खींचए लगलै, सभ आपस आबए लगल आ जेकरा घरपर अबाज जाइत रहए, ओकराेजिज्ञासा हुअ लगल जे के एहेन गवैया छी आ केतक छी? किछु विशिष्ठ मेहमान सभ सेहो घूमि आएल छला। गोनरक गाेला पछाति सभ हिनका लग बजा परिचए-पात पुछए लगल आ प्रसंशा सेहो करए लगल। गोनरकेँ आशा जगल जे कियो हिनका मदतिकरथि।

जौं शुद्ध मनसँ भगवानकेँ यादि कएल जाए तँ भगवानो कोनो रूपमे दर्शन देबे करै छथिन। वएह भेल, जीतुराज जौहर टी.वी कलाकार, गोनरकेँ अश्वासन देलकनि-

"दू महिना बाद अहाँदिल्ली आउ, ओतए संगीतक ऑडिसन छै।"

गोनर हर्षित भऽ गेल आ जोर-सोरसँ ऑडिसनक तैयारीमे लगिगेल।

ISSN 2229-547X VIDEHA


ललन कुमार कामत

लघु कथा-

बेटी

सोमनाथजी म्युनसीपल आँफिसमे पैंतीस बरख नोकरी केला पछाति रिटायर भेला। जीवनमे एक्को पाइ नजायज नै ग्रहन केलनि। सोनमनाथजी हृदैसँ पवित्र, शालिन, विनम्र आ दयाक भाव हिनका मुखमण्डलसँ हरिदम झलकैत रहैए तँए हिनकर बिशेषताबेक्तीगत संज्ञा (उपनाम) मे बदलि गेलनि आ घरसँ लऽ कऽ आँफिस धरि लोक सभ हिनका सोनाजी कहि बोलबए लगलनि।

सोनाजीकेँ तीनटा सन्तान, बड़ दुइटा लड़का, जेठ बबलू तैपर सँ डबलू आ सभसँ छोटकी बेटी उषा छन्हि। उषाक बिआह नीक घरमे, इंजीनियर बड़सँ कऽ सम्पन्न केलखिन। जमाइबाबू मुजफरपुरमे नोकरी करै छथिन ओतै सरकारी अवास भेटल छन्हि, तइमे उषा सङ्गे रहै छथिन।

जेठका बेटा बबलूक किरदानीसँदुनू परानी सोनाजीक मन बेथित छन्हि। बबलू इंजीनियरिंग करैले दिल्ली गेला मुदा हरियानाक एकटा लड़िकीक प्रेममे फँसि अपन जीवनक नैयाकेँ किनार कऽ लेलनि आ ओतै प्रेम-बिआह करि बसि गेला।

डबलू नागपुरमे बैंक मनेजर छथिन। हिनकरो बिआह भेला पछाति पत्नी सङ्गे आतै रहै छनिन। सालमे एक-आध बेर कभी-कभार घर अबै छथिन।

सोनाजी अपन जीवनसंगिनी ममताक सङ्ग बुढ़ाड़ीक पहिया जेना-तेना खिंचै छथि। बेटा-पुतोहुक सुख हिनका नसीब नै होइ छन्हि मुदा उषा, बेटी रहैतो, बेटा जकाँ देखभाल करैए। सप्ताहमे एकबेर आबि कऽ जरूरे देखि जाइत अछि। उषाक सोभाव पिताजीसँ बिरासतमे प्राप्त भेल छन्हि तँए मधुरो आ एक दोसरसँ अनुकूलो छन्हि।

सोनाजीक ई पैंसैठम बरख चलि रहल छन्हि। नोकरीसँ रिटायर भेल रहथि तँ शरीरसँ स्वस्थ छला आ भरोसा छेलनि जे आगुओ नीके रहता, मुदा मनुख तँमात्र इच्छा करैए, होइ तँ अछि वएह जे ऊपरबलाक मरजी रहै छन्हि। उषाक बिआहक पछाति दुनू बेटा दू जगह अपन-अपन घर बसा लेलकनि। सोनाजीदुनू परानीकेँ चिन्ता-फिकिर घेरड़ देलकनि। जीवन-शक्ति शिथिल भऽ गेलनि। हाथ-पएर धीमा पड़िगेलनि। आँखिक रोशनी कमि गेलनि। कानोसँ कम सुनाइ दिअ लगलनि। पाचनतंत्र गड़बड़ा गेलनि आ दिल-दिमाग सेहो दुरूस नै रहलनि। मतलब बुढ़ापा हिनकर समस्या बनि गेलनि।

बेटा सभ कभी-कभार फोन घुमा हालचालकरैत रहै छन्हि। दोस्त-यारकेँ- दबाइ दोकनदार आ मोहल्लाक डाक्टर- सभकेँ फोन घुमा कहैत रहैए जे माए-बाबूकेँ देखैत रहबै।

ISSN 2229-547X VIDEHA

सोनाजी दुनू गोटेकेँ ई परिपक्व अवस्था अछि जइमे ज्ञान, स्थिरता आ अनुभव छन्हि आ तहिक सहारे दुनू बेकती जीवन रूपी नैयाकेँ आगू खिंच रहल छथि। ओना तँ बुढ़ापा भार नै होइत अछि मुदा जब खाएल-पीअल काया जड़जड़ भऽ जाइए आ परिवारक सदस्यक संग तालमेल नै रहैए तँ परीवारमे अपन उपयोगितापर विराम लगि जाइत अछि। वृद्ध लोकनिकेँ ऐ अवस्थामे सहायता आ सहयोगक जरूरत पड़िते छै। जे बेटा-पुतोहु अपन वृद्ध माए-बापकेँ सेवा करैए वएह जीवनक उत्तम कर्म करैए। एहेन पूत जे माए-बापकेँ जीबिते छोड़ि दइए आ अपनेमे मगन रहैए ओ ओहने काज करैए जेना धिया-पुता सभ बालुक रेतसँ महल बना लइए आ तैपर गाछक डारि-पात गाड़ि कऽ बगीचा बना लइए आ खुशी मनबैत रहैए मुदा जेकरा ज्ञान अछि ओ अपन जीवनक उत्तम कर्म करैसँ पाछू नै हटैए।

आजुक समाजमे बेकती अपन बालबच्चा संग परिवारमे रीझल रहैए। माए-बाप, बूढ़-पुरानक मान-मर्यादा, तेकर सेवा सत्कारकेँ साफे बिसरि जाइए। ओहेन मनुख हरिदम पाबैक पाछू बेहाल रहैए मुदा जे हिनकालग प्राप्त वस्तु अछि ओकर उपयोग करनाइ नै जानैए। बूढ़-पुरान अनुभवी होइ छथि तँए हिनका समाजमे विशिष्ट स्थान भेटबाक चाही। जे बेकती वृद्धक सेवा नै करैए, ओ कायर होइए आ कायर लोग काल्पनिक विचारक धनवान आ महा गप्पी होइत अछि। जाबे धरि वृद्धजनक आ जुबकक समाजमे तालमेल आ समानता नै बैसत ताबे धरि समाजिक आ सांस्कृतिक काजमे स्थइरूपसँ बिकास सम्भव नै भऽ सकत।

सोनाजी शरीरसँ कमजोर होइत गेला आ बेटा पुतोहुक सहायता आ सहानुभूति घटैत गेलनि। आब हिनका याद आबै छन्हि ओ दिन, जइ दिन बेदरूकिया सभकेँ ठेहुनापर लऽ घौआ-छु मल्ले-छु करैत पढ़ैत रहथि 'लब घर उठे आ पुरान घर खसे...। खैर जे ऐ हाथसँ करैए ओकरा ओइ हाथसँ भोगए पड़ैए। अहु अवस्थामे सोनाजीकेँ रोज-मर्ड़ाक समान कीनए बास्ते हाट-बजार जाइए पड़ै छन्हि।

आइ सोनाजी सुति ऊठि कऽ शौचालय गेलखिन। होनीकेँ किछु भेनाइ रहनि, बाहर निकलिते चक्कर आबि गेलनि आ शौचालयक दरबाजासँ टकरा कऽ खसि पड़ला। ममताकेँ गिरैक अभास भेलनि, भिरकाएल फाटककेँ ठेल देखलखिन सोनाजी ढनमनाएल असहाय अवस्थामे ओङराएल आ कहरि रहल छथि। ममता धबरा गेली आ उठबैक परियास केलखिन, हिला-डोला कऽ पुछै छथिन-

"बबलूक पपा! की भेल! केना खसलिऐ! बाजू ने?"

मुदा कोनो जवाब नै भेटलनि। सोनाजीकेँ मुहसँ छर-छर लेर बहै छेलनि। ई देखि ममता हाय-बाप करए लगली, असगरि हिनकासँ उठि नै सकल, दौगल-दौगल दरबज्जापर जा हरेरामकेँ सोर पाड़लक, हरेराम दुनू परानी दौगल आएल, सोनाजीक ई दशा देखि हाँइ-हाँइ कऽ उठा-पुठा कऽ ओसार परहक खाटपर सुतेलकनि। सोनाजीक ई हलात देखि ममताक देह जेना केराक भालरि जकाँ काँपए लगलनि। की करब! आ केना हएत! किछु नै फुड़ै छेलनि। हरेराम हड़बराइत बाजल-

"काकी! डागडरकेँ फोन करू!"

मुदा फोनक डायरी सोनेजी रखने छेलखिन। ममताकेँ भेटिते ने रहनि। हरेरामक पत्नी मंजू बुझि गेलखिन जे बेगरतापर एहेन छोटसन चीज नै भेटैतछन्हि, डाक्टरकेँ बजबैले दौगल-दौगल गेली।

मोहल्लेमे डाक्टर इकबालक घर छन्हि, एलखिन। सोनाजीक मुँहक ऊपरका दूटा दाँत नीचला ठोरमे भोंका गेल रहनि तइसँ मुहसँ लेहूक टघार चलै छेलनि। उपचार शुरू भेल, कनीएकाल पछाति सोनाजीकेँ होश एलनि। ममतोकेँ जानमे जान एलनि। डाक्टर इकबाल ढाढ़स दैत कहलखिन-

"अखनि कोनो चिन्ता करैक बात नै छै, सोनाजीक ब्लडपेसर आ सूगर बढ़ि गेल छन्हि तइसँ, चक्कर एलनि मुदा समैसँ जाँच आ इलाज हेबाक चाही नै तँ हार्टएटेकक सम्भावना बाढ़ि सकैए।"

डाक्टर इकबाल पूर्जी लीखि हरेरामकेँ हाथमे दैत कहलखिन-

"ई दबाइ जल्दीए लऽ कऽ आउ, सोनाजीकेँ ठोरमे टाँका लगबए पड़त।"

तत्कालीन उपचार भेल। सोनाजीक मन पहिलेसँ नीक भेल। ममताक जीक मन हल्लुक हुअ लगल आ बेटा सभकेँ फोन लगबए लगली। जेठका बेटा बबलुकेँ पहिने फोन लगा घटनाक जानकारी देलखिन मुदा बबलू ऐ बातकेँ गंभीरतासँ नै लैत कहलकनि-

"केना खसि गेलौ? बाबूजी दबाइ खाइत रहौ की नै? तों केतए रही? दिन राति टेन्शन दइमे तूँ सब लगल रहै छँह।"

ऐ घड़ीमे बेटासँ एहेन तरहक जवाब सुनि ममताक मोह भंग भऽ गेलनि फेर छोटका बेटा डबलूकेँ फोन लगा स्थितिक जानकारी देलखिन। डबलू पिताक हाल सूनि आश्वासन दैत बाजल-

"चिन्ता नै कर। डाक्टर साहेबसँ हम बात करै छी। दीपू दोस्तकेँ घरपर भेजै छियौ डाक्टरसँ देखा कऽ दबाइओ-दारू सभ लाबि देतौ। तूँ कान-खीज नै कर।"

ममताकेँ बँचल-खोंचल आस नीरास भऽ गेलनि। खैर हिनका सभसँ ओतेआसो नै लगेने छेलखिन। आब बेटी उषाकेँ फोन लगेलनि। आन दिन उषा माए-बाबूकेँ फोन करि हालचाल जनैत रहए मुदा, आइ माइक फोन देखि चौंकली आ उत्सुकता पूर्वक बाजलि-

"हँ माय! हम सब नीके छी, मुदा बाबूजी केना छथिन?"

ममता जनैत छेली जे साँच बात बतेलासँ उषा बेसी घबरा जाएत तँए बातकेँ छोट करैत बजली-

"बाबूजीक तबीयत गड़बड़ा गेलौ आबि कऽदेखि जाही।"

मुदा भारी मन आ अवाजक थड़-थड़ाहटिसँ उषा भाँपि गेली जे साइत बाबूजीकेँ तबीयत बेसी खराब भऽ गेल अछि। घबराहटि तँ भेबे केलनि मुदा संयमसँ फोन रखि सोचए लगली जे की करी! फेर उठि कऽ बैग झारि, कपड़ा-लत्ता चोपतए लगली आ तुरंत नैहर अबैक ओरयान करए लगली। उषाकेँ एक सालक बेटी छेलनि ओकरो मँुह-कान पोछि तैयार कऽ एक काँखमे बच्चा आ दोसर हाथमे बैग उठा ओसारपर रखि घर दरबज्जामे ताला लगबए लगली। घरक चाभी बिसवासी पड़ोसीकेँ दैत पतिइंजीनियर साहेबकेँ फोन लगेलकनि जे घंटे भरि पहिले ड्यूटीपर नीकलले छेलखिन, इंजीनियर साहैब फोन रीसीभ करैत बजला-

"हँ बाजू, की बात अछि?"

उषाक मन तँ हड़बड़ाएले रहनिमुदा तैयो सम्हरि कऽ बजली-

"हम बाबूजीकेँ देखैले गाम जा रहलछी, माइक फोन आएल जे बाबूजी सिरियस छथिन। अहूँ साँझ धरि बाबूजीकेँ देखैले आबि जाएब।"

ई बात सुनि इंजीनियर साहैब चौंकि गेला। पुछलखिन-

"अखनि! अचानक! किए गाम विदा भेलौं?"

ताबे धरि उषा रिक्सापर बैसि बस स्टैण्ड दिस बिदा भऽ गेल छेली। हड़बड़ाइत बजली-

"अखनि ओते गप हम नै करब, बूझि लियनु जे बाबूजीक हालत ठीक नै अछि।"

उषाकेँ हड़बड़ाएल अवाजसँ इंजीनियर साहैब बूझि गेला जे आब हिनका कोइ नै रोकि सकैए। भरोस दैत बजला-

"जाएब तँ जाउ, मुदा मनके अस्थीर केने जाउ, आ बाजू जे पाइ-कौड़ी किछु संगमे अछि किने?"

उषा-

"अहाँ पाइक चिन्ता नै करू, हमरा संगमे ओतेपाइ अछि जइसँ, हम गाम जा सकैछी।"

इंजीनियर साहैब बात टोहियबैत पूछि देलकखिन-

"पाइ केतएसँ लाबलौं अहाँ? बजैत रहैछिऐ जे हमरा हाथमे एकोटाछिद्दीओ ने रहैए।"

उषा सकपका गेली। सकपकेबो केना ने करितथि? पतिक जेबीसँ बँचल-खूचल पाइ रोजे निकलिते रहै छेली। तैपर सँ ऊपरौसँ किछु ने किछु मांगि जरूरतिक समान कीनैबिते रहै छेली आ सभसँ जरूरी काज माए-बाबूकेँ देखै बास्ते जाए पड़ै तइमे खर्चा-बर्चा तँ होइते रहै। ई बात इंजीनियरो साहैब जनिते रहथि तँए उषा बातकेँ खोलैत बजली-

"अहाँक जेबी, जे रोज साफ होइत रहैए, वएह कोशलिया कऽ हम रखने रही, विशेष पाइक ओरीयान अहाँ साँझ धरि केने आउ।"

बेटा सभकेँ नै एलासँ ममता दुखी तँ छेली। मुदा ऊषाकेँ एलासँ निरासाक बादल छँटिगेलनि। साँझ होइत-होइत उषाक पति इंजीनियरो साहैब ऑफिससँ छुट्टी लऽ पहुँच गलखिन। विहाने भने एम्बुलेन्ससँ सोनाजीकेँ दरभंगा लऽ गेलनि आ डाक्टर यू.के बिश्वाससँ इलाज चलए लगलनि। तत्काल किछु दबाइ शुरू काएल गेल, ऑक्सिजनक खगता सेहो पड़लनि आ दिनमे तीन बेर एकर परयोग हुअ लगल। विभिन्न तरहक जाँच कराैल गेल। जाँचक किछु रिपोट तीन दिनक पछाति आएल आ किछुरिपोट हप्ता भरिक बाद आएत। जे रिपोर्ट आएल ओइमे बी.पी हाइ, सूगर बढ़ल आ संगेसंग हार्ट अटेकक सम्भावना बताएल गेल।

सप्ताह भरि इलाज चलैत रहल, तबीयतमे उतार-चढ़ाव होइत रहल, कखनो नीक जकाँगप-सप्प करैत रहथि तँ कखनो आँखि पथरा जान्हि, दम फुलए लगनि आ बेहोस भऽ जाथि। कखनो बेसुधि अवस्थामे अपने-आपसँ बड़बड़ए लगथि-

"बबलू! कखनि एलँह आ आ बैठ! कनियाँ! घर जा। अहाँ पोती छी हमर? आब! आब! बिस्कूट एकटा हमरो दिए ने! एे डबलू चाह लाबह! माएकेँ कहक चाह देत!ईह छिनरीक साँए! जेते खाएत नै तेते छिड़याएत!"

दुनू पजरामे बैसि उषा आ उषाक माए- ममता- बेना होंकि रहल छन्हि। सोनाजीक ई बड़बड़ेनाइ रोकैक बास्ते उषा सोनाजीकेँ छातीपर हाथ रखि हिला-डोला कऽ कहैए-

"बाबूजी! बाबूजी! केकरासँ गप करैछिऐ?"

सोनाजी चौंकैत बजला-

"ऊँह! नै नै गप करै छी। तोहर माए केतए छौ?"

सोनाजी किछुकाल ऊपर एकटकी नजरिसँ तकैत रहला। फेरि जेना कोनो आहटि चौंकैए तहिना चौंकैत बजला-

"डबलू गाड़ीसँ उतरि गेल जा अगुआ कऽ लाबि लहक! काल्हिए कहै छी तोहर माए किछु बुझिते नै छँह।"

सोनाजीक स्मरण शक्ति छीन्न भऽ गेल रहनि। आँखिक रोशनी चलि गेल रहनि। रहि-रहि कऽ बिछाैन होंथड़ए लगै छला। ई बेचैनीक अवस्था देखि उषा आ ममताकेँ जी-मन उड़ैत रहनि। मुदा उषा साहसी, कखनो अपन घबड़ाहटिकेँ दृष्टिगोचर नै हुअ दैत रहनि। मनकेँ थिर करैत उषा बाजलि-

ISSN 2229-547X VIDEHA

"बाबूजी! बाबूजी? एम्हर ताकू ने! हमरा चिन्है छिऐ? हम के छी कहू ते?"

सोनाजी आब देखि नै पबथि। मुदा जखनि स्मरण लौटैत रहनि तखनि अवाज परेखि नजरि घुमा-घुमा एम्हर-ओम्हर ताकि देखैक परियास करैत रहथि। कहलखिन-

"हँ, चिन्है छी! उषा दाइ छी ने अहाँ? केतए छहक आगु आबह ने।"

आइ अस्पतालमे नअ दिन भऽ गेल रहनि। एकटा जाँचक रिपोट आइ आएत। दस बजे डाक्टर बजौने छथिन। उषाक पति आ उषा रिपोटक जानकारीले क्लिनीकपर पहुँचला। कनीए कालक पछाति कम्पाउण्डर अवाज देलकनि-

"सोनाजीक गारजियन डाक्टर साहैब से मिलिए।"

उषा दुनू परानी वेटिंग हाॅलमे बैसल रहथि, बोलाहटि सुनिते डाक्टरक चेम्बरमे पहुँचला, सोफा-कुरसी लागल रहए, बैसैक संकेतक पछाति दुनू गोटे बैस गेला। डाक्टर दुनू गोटेसँ सोनाजीक संग जे सम्बन्ध छेलनि तेकर परिचए लऽ कहलखिन-

"मरीजक हालत गम्भीर अछि, रीकौभरक सम्भावना नै बँचल, जाबै धरि छथि, सेवा सत्कार करैत रहियनु।"

डाक्टरक ई बात सुनि, उषा बौक जकाँ भऽ गेल। मुँहपररूमाल रखि सिसैक-सिसैक कानए लगली। उषाक पति सेहो अवाक् रहि गेला! तैयो जिज्ञासु भऽ डाक्टर साहैबसँ पुछलखिन-

"डाक्टर साहैब! केना एना भऽ गेलनि?"

डाक्टर कहलखिन-

"फेंफड़ा हिनकर बिल्कुल खतम भऽ गेल छन्हि। ब्रेन ट्युमर सेहो बढ़ि गेलनि आ शरीरक आनो-आनो अंग सबहक कार्यक्षमता शिथिल भऽ रहल छन्हि।"

विभिन्न तरहक विमारी आ समस्याक विषयमे वार्तालापक पछाति निष्कर्ष यएह भेलनि जे सोनाजीक बिमारी ठीक हेबाक कोनो गुंजाइश नैछन्हि।

दुनू बेकती नीराश भऽ चेम्बरसँ बाहर एला, उषा बाहर निकलिते भोकारि पाड़ि-पाड़ि कानए लगली। पति साहस बढ़बैत कहलखिन-

"अहाँ जौं एना कनब तँ माएकेँ की हएत? शान्त रहू, मनकेँ बुझाउ! जे हेबक छै से तँ भाइए कऽ रहत। सुझि-बुधिसँ काम लिअ! माएकेँ ऐ बातक जानकारी नै चलकचाही। हुनको सम्हारि कऽ आब अहींकेँ राखए पड़त ने। नै कानू। चूप रहू।"

उषो सोचलनि जे अखनि हमरा कानबसँ नोकसान छोड़ि आर किछु नै हएत। कहुना मनकेँ बुझबैत चुप भेली। सोनाजी कमरामे बेडपर पड़लरहथि, बगलमे ममता पंखा हौकैत रहनि, तइ बगलमे पजरा लागि उषा बैस गेली आ सोनाजीकेँ मँुह निहारए लगली।

बेटा सभ टाल-मटोल करैत पिताक पराण छुटैकाल गाम आएल जखनि सोनाजी केकरो ने चिन्ह सकै छेलनि आ ने केकराे देखिए सकै छला।

ललन कुमार कामत
सम्पर्क-
ललमनियाँ, मरौना, सुपौल।

गोल इंग्लिश गार्डेन निर्मली।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन




सिद्धिरस्तु